खंड III
कांस्य युगीन सभ्यताएँ

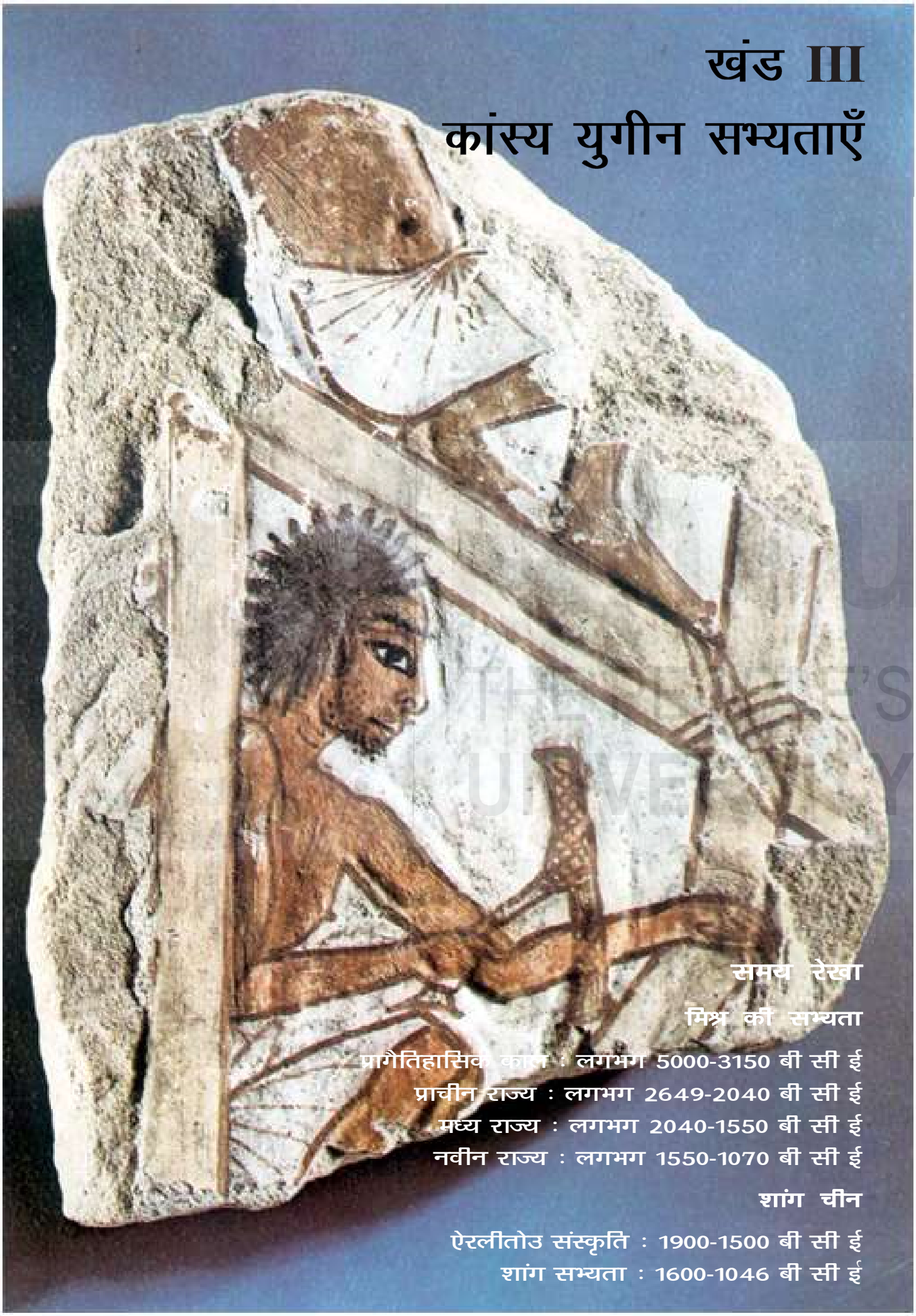

समय रेखा

मिश्र की सभ्यता

प्रागैतिहासिक काल : लगभग 5000-3150 बी सी ई
प्राचीन राज्य : लगभग 2649-2040 बी सी ई
मध्य राज्य : लगभग 2040-1550 बी सी ई
नवीन राज्य : लगभग 1550-1070 बी सी ई

शांग चीन

ऐरलीतोउ संस्कृति : 1900-1500 बी सी ई
शांग सभ्यता : 1600-1046 बी सी ई

चित्रांकन: मिश्र के काष्ठकर्मी
फोटोग्राफ: n.e.r.g.a.l
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Egyptain_Carpenter.jpg

इकाई 7 कांस्य युगीन सभ्यताएँ: मुख्य विशेषताएँ*

इकाई की रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 कांस्य युग के लिए स्रोत

7.4 कांस्य युग में देश और काल

7.5 कांस्य युग में धातु

7.6 नगरीकरण

7.7 अधिशेष और श्रम का विनियोजन

7.8 लेखन

7.9 लंबी दूरी के संपर्क

7.10 कांस्य युगीन समाज

7.11 सारांश

7.12 शब्दावली

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.14 संदर्भ ग्रंथ

7.15 शैक्षणिक वीडियो

7.1 उद्देश्य

इस इकाई में हम एक ऐसे काल का अध्ययन करेंगे जिसे पुरातत्वविद और इतिहासकार कांस्य युग कहते हैं, यह एक ऐसा काल है जिसने मानव इतिहास में बसावट, तकनीक, साथ ही सामाजिक और आर्थिक संशलिष्टताओं के मामले में बड़ा परिवर्तन देखा। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- 'कांस्य युग' शब्द के अर्थ की व्याख्या कर सकेंगे,
- कांस्य युग को सभ्यता की अवधारणा से जोड सकेंगे, और
- कांस्य युग द्वारा प्रस्तुत महत्वपूर्ण सामाजिक रूपों, विशेषकर शहरीकरण, लेखन तथा दूरस्थ संपर्क के क्षेत्र में, के परिणामों की पहचान कर सकेंगे।

7.2 प्रस्तावना

वी. गॉर्डन चाइल्ड के शब्दों में कांस्य युग मानव इतिहास के लिहाज़ से 'एक अत्यंत छोटा काल' था, फिर भी समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। अपने आस-पास की सारी वस्तुएँ जिन्हें आज हम पहचानते हैं, मसलन शहर जहाँ हम रहते हैं, या जैसा शिल्प हम रचते हैं, या यातायात की तकनीकी, या यह तथ्य कि लेखन का उपयोग हम अभिलेखन के साधन की तरह करते हैं, इनमें से अधिकाँश का उद्भव करीब-करीब पांच हज़ार साल पहले हुआ था। यह एक ऐसा काल भी था जिसने कांस्य युग की पूर्व परिचित तकनीकों का चरमोत्कर्ष देखा। उदाहरण के लिए, कृषि या पशुपालन पौधों और पशुओं की प्रजातियों के साथ मनुष्यों के करीब दो हज़ार साल लम्बे प्रयोग का परिणाम था। परन्तु यह उत्पादकता का बढ़ा हुआ स्तर ही था जिसने अंततः ज़्यादा जटिल सामाजिक संरचनाओं की राह बनायी।

* प्रो. जया मेनन, शिव नाडर विश्वविद्यालय, नोएडा, उत्तर प्रदेश

चर्चा को शुरू करने के लिए हमें दो शब्दों का संज्ञान लेना ज़रूरी है: 'कांस्य युग' और 'सभ्यता'। 'कांस्य युग' शब्द प्रत्यक्षतः एक ऐसे युग का द्योतक है जब अपने प्रमुख औज़ारों को बनाने के लिए मनुष्यों ने कांसे का उपयोग किया। इसका आशय यहाँ भौतिक पदार्थों के इस्तेमाल के एक अनुक्रम से है जब मनुष्यों ने पहली बार पत्थर का उपयोग किया, फिर तांबा-कांसा से होते हुए आखिरकार लोहे तक पहुंचे। यद्यपि यह सही है कि प्रमुख औज़ारों को बनाने में कांसे का उपयोग हुआ लेकिन 'कांस्य युग' शब्द का असली महत्व नगरीकरण और राज्य समाजों वाले एक विशिष्ट सामाजिक ढाँचे, दूसरे शब्दों में, सभ्यता से इसके परस्पर सम्बन्धों में है।

'सभ्यता' शब्द का उपयोग यहाँ परिष्कृत या परिशुद्ध के अर्थ में नहीं है। शेरीन रत्नागर के अनुसार यह 'सामाजिक विकास का एक चरण है, एक कमरे वाली झोपड़ियों से जटिल भवनों के स्थापत्य तक, मौखिक परम्परा से साक्षरता तक, ग्रामीण गृहस्थी से शहरी जीवन तक, और पत्थर पर निर्भरता से धातु और पत्थर तक' (रत्नागर, 2001: 13)। 'सभ्यता' का सम्बन्ध भौगोलिक विस्तार के माप से, एक ही तरह की (1) लेखन व्यवस्था; (2) कला संहिता; (3) धातुकर्म; और (4) शैली तकनीकों के समुच्चय का उपयोग करने वाले समूहों से भी है। पुरातात्त्विक आधार पर ये समानताएं बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में नियमितता की तरह प्रकट होती हैं। भौतिक सामग्रियों की नियमितता का यह योग उस व्यवस्था को बनाता है जिसे पुरातत्त्वविद 'संस्कृतियाँ' कहते हैं। पुरातात्विक अर्थों में संस्कृतियाँ एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र और कालावधि से प्राप्त संकलित पुरावशेषों के समूह के समान हैं। हड़प्पा सभ्यता दक्षिण एशिया में कांस्य युगीन 'संस्कृति' का एक उदाहरण है।

आरंभिक सभ्यताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करने वाले ब्रूस ट्रिगर (2003) का विचार है कि सभ्यता विषयक 19वीं शताब्दी का विवेचन, लेखन को मूल विशेषता मानता है, क्योंकि इसने ही अभिलेखन और जटिल वाणिज्यिक लेन-देन को संभव किया। परन्तु इसके बाद गॉर्डन चाइल्ड (1950) ने आरंभिक सभ्यताओं या शहरी समाजों की दस विशिष्टताओं को इंगित किया। इसमें शामिल हैं: (1) बड़ी सघन आबादी; (2) अधिशेष द्वारा गैर-कृषक नागरिकों का जीवन यापन; (3) प्राथमिक उत्पादकों द्वारा किसी देवता या शासक को अधिशेष का भुगतान; (4) भव्य स्थापत्य; (5) एक शासक वर्ग; (6) अभिलेखन की प्रणाली; (7) वास्तविक विज्ञानों का विकास; (8) भव्य कला; (9) लम्बी दूरी का व्यापार और; (10) कुलीनों द्वारा नियंत्रित स्थानीय विशेषज्ञ शिल्पकार। यद्यपि चाइल्ड की तालिका को सभ्यता की अवधारणा समझने में पहला कदम माना जा सकता है, परन्तु लक्षणों की ऐसी तालिकाएँ समाज के वर्गीकरण में सहमतियों के बदले विवाद ही पैदा करती हैं।

ट्रिगर (2003: 44) का मानना है कि: 'इसके बदले आरंभिक सभ्यताओं का एक ज़्यादा उपयोगी चरित्र-चित्रण अनिवार्यतः सामान्य सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक संस्थाओं और उस स्तर तक जटिल समाजों के काम करने के लिए ज़रूरी ज्ञान और विश्वासों के संयुक्त प्रकारों के अनुसार होना चाहिए। तकनीक, बसावट के पैटर्न, कला, और स्थापत्य को केवल इस रूप में समझा जा सकता है कि वे ऐसी संस्थाओं के भौतिक सहयोग में, सामाजिक मेल-मिलाप को संभव करने और समाज के अलग-अलग हिस्सों के विचारधारात्मक उद्देश्यों को बढ़ाने में क्या भूमिका निभाते हैं।'

7.3 कांस्य युग के लिए स्रोत

कांस्य युग के बारे में हम उपलब्ध लिखित रिकॉर्डों और उन समाजों के भौतिक अवशेषों, दोनों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। कांस्य युग वह काल है जिसकी पहचान विभिन्न कार्यों के लिए लेखन का उपयोग है। इस प्रकार मेसोपोटामिया का लेखन **'कीलाकार' (cuneiform)** कहलाता है, जबकि मिस्री लेखन ने **'चित्रलिपि' (hieroglyph)** का रूप लिया। यद्यपि भौतिक साक्ष्यों का अधिकांश भाग लेखन से प्राप्त होता है, भौतिक और पुरातात्त्विक साक्ष्यों के दूसरे रूपों

में स्मारक, कला, और दिन-प्रतिदिन उपयोग की अनगिनत वस्तुएं (जैसे मृदभांड, आभूषण, औज़ार) भी शामिल हैं। भौतिक अवशेषों की एक सीमा उसकी प्रकृति के इर्द-गिर्द घूमती हैः भौतिक सामग्री जैविक है या अजैविक। अधिकाँश स्थितियों में जैविक सामग्रियाँ (जैसे वस्त्र, बेंत, लकड़ियाँ), अजैविक सामग्रियों जैसे पत्थर, धातु और मृत्तिका की तरह बची नहीं रहतीं। हालांकि, मिस्र की अत्यंत शुष्क स्थितियों में लकड़ी, बेंत, और कपड़ों जैसी जैविक सामग्रियाँ भी बची रह गईं जो हमें लोगों की रोज़मर्रा की जिंदगियों में इनके व्यापक उपयोग का पता देती हैं।

चित्र 7.1 : मिस्र में वैली ऑफ़ किंग्स में स्थित फिरौन (Pharaoh) सेति I (मिस्र के उन्नीसवें राजवंश के नए राज्य का फिरौन) की कब्र से प्राप्त मिस्री चित्रलिपि

साभारः जॉन बॉड्स्वर्थ, 2007

स्रोतःhttps://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c9/Hieroglyphs_from_the_tomb_of_Seti_I.jpg

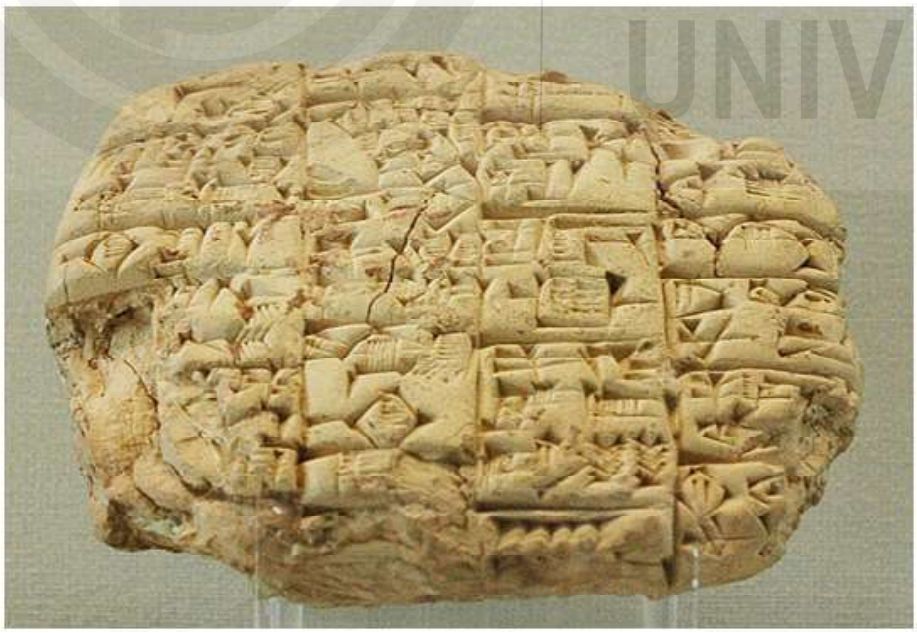

चित्र 7.2 : मिट्टी की पट्टिका पर लिखा पत्र जिसे लगाश के राजा को लुएना नामक उच्च-पुरोहित ने लगभग 2400 बी सी ई में भेजा। यह मेसोपोटामिया की आरम्भिक कीलाकर लिपि में लेखन को दर्शाता है। वर्तमान में यह पट्टिका पेरिस, फ्रांस के लूव्र संग्रहालय में प्रदर्शित है।

साभारः जस्त्रो, 2005

स्रोतःhttps://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/d/d5/Letter_Luenna_Louvre_AO4238.jpg

मेसोपोटामिया और मिस्र दोनों सभ्यताओं का इतिहास अधिकांशतः इन उपलब्ध लिखित स्रोतों पर आधारित हैं क्योंकि इन क्षेत्रों में इस लिपि को पढ़ लिया गया है। इसी समय मिस्री पिरामिड की संपदा और साथ ही मेसोपोटामियाई शहरों में मिले मंदिरों, महलों, और शाही क़ब्रों ने लम्बे समय से पुरातात्त्विक ध्यान को आकर्षित किया है। लेखन और समाधियों से प्राप्त संपदा हमें समाज के अभिजात्य वर्गों के जीवन का पता देती हैं। हाल ही के कुछ वर्षों से घरों और रोज़मर्रा की वस्तुओं के पुरातात्त्विक साक्ष्यों से समाज के दूसरे वर्गों को समझने की शुरुआत हुई है।

7.4 कांस्य युग में देश और काल

प्रमुख कांस्य युगीन सभ्यताएँ फ़रात (मेसोपोटामिया), नील (मिस्र), सिन्धु (हड़प्पा) और पीली नदी (शांग) (नक़्शे पर उनकी अवस्थिति के लिए देखें **मानचित्र 7.1**) की नदी घाटियों में मिलती हैं। **इकाई 8** मिस्र की सभ्यता के बारे में है, जबकि शांग सभ्यता पर **इकाई 9** में विचार किया जाएगा। कांस्य युग और सभ्यता दो अलग-अलग पहलू हैं। दुनिया का हर हिस्सा कांस्य युग से नहीं गुज़रा, फिर भी अगर हम दूसरी सभ्यताओं को देखें तो कई नाम दिमाग में आते हैं, जैसे क्लासिक माया (250-800 सी ई), उत्तर एज़्टेक (आरंभिक 16वीं सदी सी ई) और इंका (आरंभिक 16वीं सदी सी ई) (हालांकि ये सब समय में मेसोपोटामिया, मिस्र, हड़प्पा, और शांग के बाद हैं) **(नक्शे पर उनकी अवस्थिति के लिए देखें मानचित्र 7.1)**।

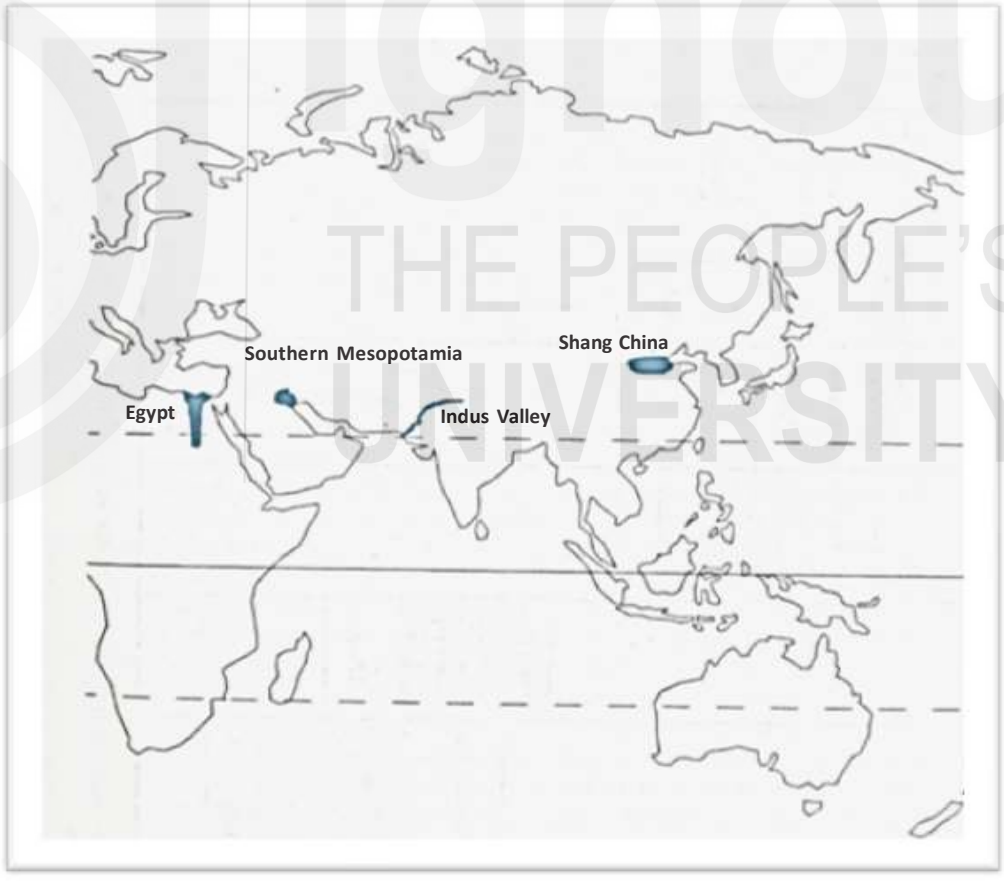

मानचित्र 7.1: आरंभिक कांस्य युगीन सभ्यताओं की अवस्थितियाँ
ब्रूस ट्रिगर, 2003: 31 पर आधारित

सभ्यताएँ कभी-कभी 'प्राथमिक' और 'द्वितीयक' में वर्गीकृत की जाती हैं। प्राथमिक सभ्यताएँ पुरानी दुनिया के हिस्सों में विकसित हुईं और जहाँ पहली बार इनके विशिष्ट चरित्र (जैसे नगरीकरण, लेखन, और लोगों के बीच सामाजिक-आर्थिक ऊँच-नीच) के दर्शन होते हैं। जिन क्षेत्रों में बाद में इन सभ्यताओं का विस्तार हुआ उन्हें द्वितीयक सभ्यताएँ कहते हैं। द्वितीयक सभ्यता की अवधारणा में विस्तार या विसरण दोनों ही हो सकते हैं। हालाँकि बहुत सारे क्षेत्र

जो पहले द्वितीयक सभ्यताओं में शामिल माने जाते थे अब विद्वान वहां देशज विकास के चिह्न देख रहे हैं, जो विसरण (diffusion) के विचार को नकारते हैं।

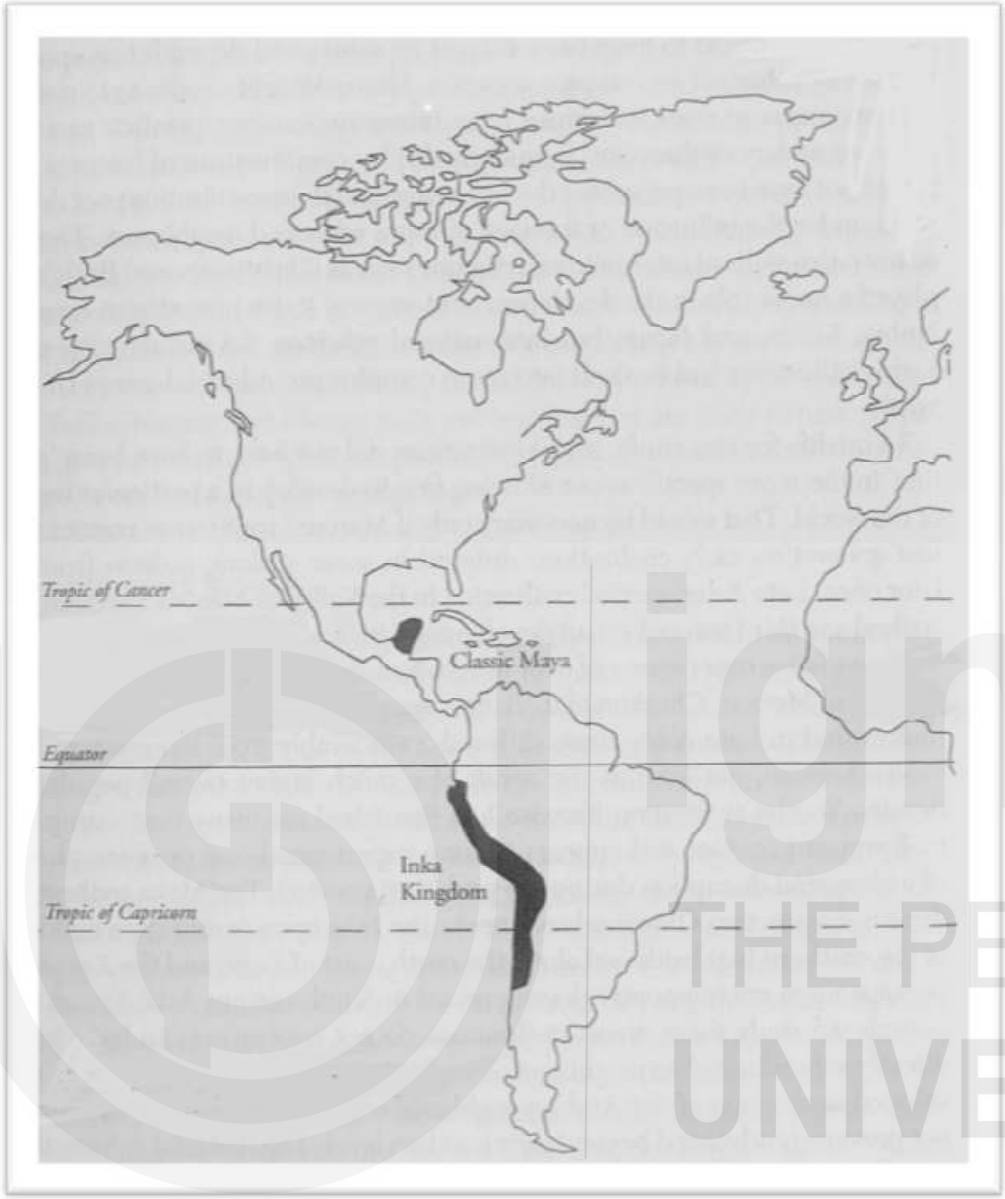

मानचित्र 7.2 : क्लासिक माया और इंका राज्यों की अवस्थिति

ब्रूस ट्रिगर, 2003: 30 पर आधारित

नदी घाटियों में आरंभिक सभ्यताओं का होना महज़ संयोग नहीं है। सभ्यताएँ और आरम्भिक राज्य संरचनाएँ जिस उच्च उत्पादकता पर निर्भर थीं उसे केवल कछारी मैदानों की उपजाऊ मिट्टी में ही हासिल किया जा सकता था। इन घाटियों में दूसरी अधिकाँश जरूरी कच्ची सामग्रियों का अभाव था, जैसे अच्छी किस्म की इमारती लकड़ी, धातुएं और पत्थर।

पुरानी दुनिया (मेसोपोटामिया और मिस्र) की सबसे आरंभिक सभ्यताओं का काल मोटे तौर पर चौथी और तीसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई है। दक्षिण एशिया में हड़प्पाई कांस्य युग तीसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई का उत्तरार्द्ध है। चीन की शांग सभ्यता और बाद की है जिसका काल दूसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई का उत्तरार्द्ध है।

बोध प्रश्न-1

1) 'कांस्य युग' शब्द के अर्थ की व्याख्या कीजिए। 'सभ्यता' शब्द के साथ इसके सम्बन्धों को रेखांकित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) कांस्य युग को समझने के प्रमुख स्रोतों का विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सूची 'क' में दी गई नदी का मिलान सूची 'ख' में दी गई उससे संबंधित सभ्यता से करें।

क	**ख**
नदी	**सभ्यता**
a) फरात	i) मेसोपोटामिया
b) सिन्धु	ii) शांग चीन
c) पीली नदी	iii) मिस्री
d) नील	iv) हड़प्पाई

7.5 कांस्य युग में धातु

नयी धातु के रूप में तांबे का पहला उपयोग कांस्य युग के पहले हुआ, एक ऐसे काल में जिसे 'ताम्रपाषाण' कहा जाता है, या एक ऐसा काल जब तांबा और पत्थर दोनों का उपयोग औज़ार बनाने के लिए मुख्यतः होता था। औज़ार की प्राथमिक सामग्री के रूप में तांबा (यहाँ तक कि कांसा) अनिवार्यतः पत्थर की तुलना में ज़्यादा कारगर नहीं था। पत्थर का महत्व इसके टिकाऊपन, शक्ति, साथ ही सुप्राप्यता, और इससे औज़ार निर्माण में थी। परन्तु तांबे या कांसे की प्राथमिक सुविधा यह थी कि ढलाई की तकनीक द्वारा इनसे जटिल आकारों का निर्माण संभव था। इसका अर्थ था कि धातु को पिघला कर इस प्रकार ढाला जा सकता था कि पिघली हुई धातु अपने ढाले जाने वाले पात्र का आकार ग्रहण कर सकती थी। कांस्य युग में औज़ार निर्माण की प्राथमिक सामग्री तांबा और बहुधा इसकी मिश्र-धातु कांसा थी। कांसा दो धातुओं का मिश्रण होता है, बहुधा तांबा और टिन, लेकिन तांबा और सीसा या साथ-साथ तांबा और आर्सेनिक भी। टिन के संयोग से मिश्र-धातु शुद्ध तांबे से ज़्यादा कठोर हो जाती है जो औज़ार उत्पादन के लिए अधिक उपयुक्त साबित हुई। मिश्र-धातु तकनीक का मतलब था कि धातुकर्म इस हद तक विकसित हो चुका था जहाँ दो धातुओं के मिश्रण से एक नयी धातु का निर्माण हो सकता था। चाइल्ड का विचार है कि धातुकर्म की तकनीक के लिए ऊष्मा द्वारा पदार्थ के भौतिक गुणों में मूलगामी परिवर्तन का अंतरंग ज्ञान ज़रूरी था। इन कौशलों की प्रकृति के कारण धातु-कर्मी को वह संभवतः पहले-पहल विशेषज्ञों में एक मानते हैं।

कांस्य युग में टिन-कांसा पर निर्भरता के दूरगामी परिणाम हुए। तांबा विरल है उससे भी कहीं ज़्यादा टिन। इन सामग्रियों की आवश्यकता का मतलब था इन्हें कछारी मैदानों में, जो सभ्यता

के केंद्र थे, वहां लाना। बहुत संभव था कि शिल्पी, जैसे धातु-कर्मी अयस्कों के स्रोत तक जाते हों, उन्हें पिघलाते और काम के लिए धातुओं को शुद्ध रूप में वापस ले आते हों। इस प्रकार इस शिल्प ने कुछ हद तक गतिशीलता को अनिवार्य बनाया होगा।

कांस्य युग में औज़ारों की कच्ची सामग्री के रूप में धातु ने पूरी तरह पत्थर को विस्थापित नहीं किया। दक्षिण एशिया में हड़प्पावासियों ने सिंध में सिन्धु नदी के किनारे रोहरी की चट्टानों से प्राप्त अच्छी किस्म के बिल्लौर पत्थर (chertः एक प्रकार का पत्थर) से ब्लेड बनाना जारी रखा। पुरातात्त्विक रूप से हमें टूटे और मुड़े हुए ताम्र औज़ार और वस्तुएं मिलती हैं जो संभवतः पुनर्चक्रण (गला कर पुनः उपयोग) के लिए रखी जाती थीं।

तांबे और कांसे के पुनर्चक्रण का फायदा इसलिए संभव था क्योंकि इन सामग्रियों की प्रकृति के कारण इन्हें पिघला कर नए रूपों में ढाला जा सकता था। ताम्र औज़ारों और वस्तुओं के भण्डार उस समाज में धातु विशेष के महत्व और इनकी विरलता की ओर संकेत करते हैं, इसी प्रकार पुनरूपयोग के लिए इनके परिरक्षण की ज़रुरत की ओर भी।

7.6 नगरीकरण

नगरीकरण के साथ जुड़ाव कांस्य युग के प्राथमिक चरित्रों में से एक है। गॉर्डन चाइल्ड नगरीकरण के विकास को क्रान्ति की तरह देखते हैं जिसे वह 'नगरीय क्रांति' कहते हैं। हमने पहले देखा कि वह नगरीकरण की पहचान कुछ विशिष्ट पुरातात्त्विक लक्षणों से करते हैं। अगर कोई उनकी नगरीकरण के लक्षणों की तालिका से पूर्णतः सहमत न भी हो फिर भी यह स्पष्ट है कि कांस्य युग की प्रमुख पहचान नगर हैं। कई नगर, जैसे मेसोपोटामिया में उर और उरुक और दक्षिण एशिया में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, कांस्य युगीन नगरों के शीर्ष प्रतीक हैं। हम उनमें चाइल्ड के लक्षणों को देख सकते हैंः भव्य स्थापत्य, लेखन, कला, माप की व्यवस्था, कृषि अधिशेष के सहारे गैर-कृषि व्यवसाय और विशेषज्ञता की वृद्धि, सामाजिक असमानता, और लम्बी दूरी के व्यापार।

नगरीकरण एक सुरक्षित कृषि आधार पर निर्भर करता है। हमें अवश्य ही ध्यान देना चाहिए कि उपजाऊ अर्धचंद्राकार क्षेत्र (Fertile Crescent; लेवांट से ईरान तक चापाकार आकृति में फैला क्षेत्र) के उत्तरी पहाड़ी इलाके बहुत पहले, करीब दस हजार से आठ हजार साल पूर्व, ही खेती और पशुपालन की शुरुआत के साक्षी रहे हैं। परंतु इन इलाकों में नगरों का विकास नहीं हुआ। नगरीय विकास के लिए लोगों को दक्षिणी मेसोपोटामिया के वृहत कछारी मैदानों में आना पड़ा। यह एक क्रमिक आन्दोलन था। सबसे पहले पहाड़ी इलाकों से आधुनिक बग़दाद के इलाके के उत्तरी कछारों में, फिर बड़े-पैमाने पर आबादी का कछारी मैदानों के उत्तरी हिस्से से दक्षिणी कछारों की ओर प्रवास की शुरुआत प्रारंभिक-मध्य उरुक काल (4000-3400 बी सी ई) में हुई लेकिन प्रभावी रूप से इसकी पहचान प्रौढ़ उरुक काल (3400-3200 बी सी ई) में ही हुई।

मेसोपोटामिया में शहरी विकास पर लिखने वाले रॉबर्ट एडम्स (1972) मानते हैं कि दक्षिणी कछारी क्षेत्रों में नगरों का विकास कई कारकों का संभव परिणाम थाः बड़ी संख्या में ग्रामीणों का दक्षिण की ओर प्रवास के साथ ही अभी तक घूमंतू रहने वाले लोगों के बसने के कारण। इसके कारण उरुक जैसे दक्षिणी कछारी नगरों की आबादी में बहुत बढ़ोतरी हुई। आबादी में ऐसी वृद्धि को महज़ एक नगर के भौतिक आकार-विस्तार से देखा जा सकता हैः आरंभिक उरुक काल के सत्तर हेक्टेयर से प्रौढ़ उरुक काल तक आते-आते उरुक सौ हेक्टेयर का हो जाता है और अंततः आरंभिक राजवंश काल (3000-2350 बी सी ई) में विशाल चार सौ हेक्टेयर तक बढ़ जाता है। आबादी की ऐसी ही गतिशीलता दक्षिण एशिया में भी देखी जा सकती है, बलुचिस्तान इलाके की पहाड़ियों से सिन्धु घाटी तक। प्रौढ़ हड़प्पाई काल में घाटी

के इलाकों पर लोगों के कब्ज़े से पहले पहाड़ी ढलानों की आरंभिक हड़प्पाई बस्तियाँ और उसी तरह घाटी में आरंभिक आगमन और बस्तियाँ भी आवश्यक रूप से काफी छोटी थीं। अंततोगत्वा मोहनजोदड़ो आकार में सौ हेक्टेयर से भी ज़्यादा हो गया (विस्तार के लिए, देखें, **इकाई 7, बी एच आई सी-101: भारत का इतिहास-1**)। दोनों मामलों में, बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादकता में बढ़ोतरी छोटी पहाड़ी घाटियों में नहीं अपितु महान् नदियों की विस्तृत घाटियों में ही संभव थी।

कृषि उत्पादकता का करीबी सम्बन्ध सालाना और नियमित रूप से अपने किनारों को आप्लावित करने वाली हमेशा जल से भरी नदियों द्वारा जमा होने वाली गाद से था। कृषि उत्पादकता जोत की तकनीक पर भी निर्भर थी। बीज बोने वाला हल (seeder-plough) जैसा नवीन तकनीकी प्रयोग मेसोपोटामियाई कृषि की पहचान थी, जिसने रोपण, बीजों की कम बर्बादी, और अच्छे समय में 1:76 जैसे अत्यधिक बीज-पैदावार अनुपात को भी संभव बनाया। बहुत संभव है कि जैसा उच्च-नगरीकरण हम देखते हैं वह मेसोपोटामियाई कृषि की उच्च उत्पादकता का परिणाम हो, उदाहरण के लिए, उरुक के मामले में हम देखते हैं कि यह तीसरी सहस्त्राब्दी की शुरुआत तक चार सौ हेक्टेयर का आकर अख्तियार कर लेता है।

आरंभिक कांस्य युगीन समाजों के लिए कृषि उत्पादकता इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी? बहुत कुछ अभी की तरह ही उच्च कृषि उत्पादकता दूसरे विशेषीकृत लेकिन गैर-कृषि कार्यों में लगे लोगों के पोषण को मजबूत आर्थिक आधार उपलब्ध कराती है। मुद्रा के अभाव में काम करने वाला एक कांस्य युगीन समाज ऐसा इसलिए कर पाया क्योंकि इसकी उत्पादकता ने उत्पादन में हिस्सा न लेने वाले गैर-कृषकों के निर्वाह को भी संभव किया। नगर प्राथमिक रूप से अपने द्वितीयक पेशों से पहचाने जाते हैं, जहाँ लिपिक, सौदागर, शिल्पी, और आनुष्ठानिक पुरोहितों जैसे विशेषज्ञों की जगह होती है। ऐसे पेशे नगरों में इसलिए फलते-फूलते हैं क्योंकि नगरीय केन्द्रों के भीतर या सीमांत पर रहने वाले प्राथमिक उत्पादकों से अधिशेष आता रहता है।

7.7 अधिशेष और श्रम का विनियोजन

अधिशेष और शासक समूह, आरंभिक शहरों के लिए चाइल्ड की यह दो कसौटियां महत्वपूर्ण हैं। अधिशेष केवल निर्वाह के लिए ज़रूरी न्यूनतम से अधिक और ऊपर का अतिरिक्त उत्पादन/आमदनी मात्र ही नहीं है बल्कि अधिशेष में एक राजनीतिक सत्ता निहित है जो अधिशेष के संचय को संभव बनाती है। मेसोपोटामिया की बड़ी सार्वजनिक संस्थाओं (जैसे कि मंदिर, महल, और लोक अधिकारियों या कुलीन समूहों को हासिल विस्तृत भू-क्षेत्र या जागीरें) को हम ऐसी क्रियाविधि की तरह देख सकते हैं जिससे अधिशेष का उत्पादन और संचयन होता था। सूज़न पोलॉक (1999: 118) इन जागीरों को गृहस्थी-आधारित अर्थतंत्र के समेकित हिस्से की तरह व्याख्यायित करती हैं। मंदिरों, महलों और जागीरों को **'ओइकोइ'** ('गृहस्थियों' के लिए ग्रीक शब्द से व्युत्पन्न) या फिर 'महा गृहस्थी' कहा गया है। ये सब अधिकतर गैर-नातेदारी आधारित, प्रबंधकीय पदों के कर्मचारियों की शक्ति पर निर्भर, साथ में जानवरों के झुंडों, चरागाहों, मैदानों, बागीचों, भंडारण सुविधाओं, और शिल्पियों की कार्यशालाओं वाली बड़ी सामाजिक-आर्थिक इकाईयां थीं। ओइकोस, समुदाय की भेंट पर निर्भर अर्थनीति से दूर ऐसे परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता था जहाँ ओइकोस की अपनी विविध और बड़ी कार्यशक्ति थी।

ओइकोस के द्वारा उत्पादित ज़रूरतों (खाद्यान, तेल, वस्त्र) का उपयोग संस्थानों में स्थित गैर-कृषि उत्पादक गतिविधियों में लगे कर्मचारियों और साथ ही इन संस्थानों के लिए काम करने आने वालों के पोषण के लिए होता था। राज्य द्वारा गैर-कृषक विशेषज्ञों में अधिशेष के पुनर्वितरण का यह चक्र कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था में अन्तर्निहित था। अधिशेष के इन्हीं वितरणों के भीतर से हम कांस्य युगीन भव्य स्थापत्य, जैसे मेसोपोटामिया के मंदिरों और

महलों, मिस्र के पिरामिडों, और मोहनजोदड़ो के नगर-दुर्ग टीले पर बने विशिष्ट स्थापत्य के निर्माण को देख सकते हैं। केवल यही नहीं, मेसोपोटामियाई मंदिर अभिलेख हमें सूचित करते हैं कि लिपिक, कुम्हार, और दूसरे शिल्पी, चरवाहे, और सौदागर मंदिरों में ही रहते थे और उनके लिए काम करते थे। श्रम-शक्ति बहुत अधिक विशेषीकृत थी और सेवा की शर्तें अंशकालिक और ठेके से लेकर स्थायी श्रम अनुबंध तक नानारूपी थीं।

मिस्र के सन्दर्भ में बैरी कैम्प (1991) बताते हैं कि मंदिर कर्मचारी समूहों में विभाजित थे और संभवतः अलग-अलग समय काम करते थे और प्रत्येक उप-विभाग दस में से एक महीने सेवा देता था। बाकी समय वे अपने गाँवों में कृषि और अन्य कार्य सम्पन्न करते थे, लेकिन मंदिरों की प्रतिष्ठा के नाते वे मंदिरों को अपना श्रम देते और एवज़ में खान-पान के रूप में कुछ सांत्वना भी पाते। 'इसका व्यवहारिक फल था राज्य द्वारा नौकरियों की व्यापक हिस्सेदारी। कर्मचारियों की संख्या की आवश्यकता कई गुणा बढ़ गयी थी जिससे राज्य द्वारा आंशिक सहयोग पाने वाले लोग भी बढ़ गए। चूंकि यह व्यवस्था केवल अंशकालिक थी, इसलिए अनावश्यक कर्मचारियों की उपस्थिति से यह अवरुद्ध नहीं हुई' (कैम्प, 1991: 113)। हम यहाँ जो देख रहे हैं वह है पुरोहितों और राज्य की संस्थाओं द्वारा श्रम का व्यापक विनियोजन। उच्च स्तरीय विशेषीकरण वाली कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था मुद्रा के अभाव में श्रम विनियोजन के ऐसे ही किसी तंत्र के माध्यम से कार्य कर सकती थी।

बोध प्रश्न-2

1) पत्थर की तुलना में तांबा और कांसा के उपयोग के फायदे बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) नगरीकरण क्या है? शहरी संस्कृतियों की तीन प्रमुख विशेषताएँ बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

3) कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था में 'महा गृहस्थियों' का क्या कार्य था?

.....

.....

.....

.....

.....

4) मुद्रा के अभाव में कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था कैसे काम करती थी?

.....

.....

.....

.....

7.8 लेखन

श्रम के विनियोजन और बड़ी संस्थाओं और जागीरों के रख-रखाव ने अभिलेखन कार्य को अनिवार्य बनाया। भले ही शुरुआती समाजों में गिनती की सरल व्यवस्थाएं रही हों, विभिन्न आदान-प्रदानों को याद रखने तथा कब, कहाँ और किस प्रकार के लेन-देन हुए इसके अभिलेखन के तरीकों ने जटिल सांकेतिक व्यवस्थाओं को आवश्यक बना दिया। कांस्य युग में लेखन का विकास बड़ी जागीरों द्वारा विविध प्रकार के अभिलेख रखने में तथा खेतों की पैदावार का; जानवरों के झुण्ड की संख्या का; शिल्पकारों को आवंटित कच्चे माल का; शिल्पियों के उत्पादन का; सौदागरों द्वारा लाये गए कच्चे माल आदि का रिकार्ड रखने में हुआ।

अभिलेखन उद्देश्यों में शुरुआती उपयोग के अनंतर लेखन का दायरा बढ़ते हुए मिथकों, स्तुति गीतों व भजनों, आधारभूत कहानियों, शाही शिलालेखों और अंततः कानूनी कोड को भी शामिल कर लेता है। साक्षरता का व्यापक प्रसार संभव नहीं था, और समाज के बहुत छोटे से हिस्से के पास पढ़ने और लिखने की योग्यता थी। यह अनुमान लगाना मुश्किल नहीं होगा कि इस योग्यता के साथ बड़ी शक्ति भी आई।

अलग-अलग कांस्य युगीन समाजों में लेखन ने अलग-अलग रूप ग्रहण किया। मसलन, मेसोपोटामिया में लेखन कीलाकर लिपि (विस्तार के लिए नीचे वर्णित बॉक्स देखें) में विकसित हुई। लेखन के आरंभिक रूप आज उपयोग में नहीं हैं इसलिए इतिहासकारों और पुरातत्त्वविदों के लिए इन्हें पढ़कर समझना ज़रूरी था। पत्थर और मृत्तिका से बनी लेखन युक्त वस्तुएँ अपने लेखों के माध्यम से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचनाएँ प्रदान करती हैं। इन आरंभिक लिखित साक्ष्यों के सहारे हमें आरंभिक समाजों, उनके लेन-देन, उनके सामाजिक संबंधों, उनके शासकों और देवताओं, उनके रीति-रिवाजों, और उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं का पता चलता है।

कीलाकार लिपि

- सबसे पुराना लेखन उरुक शहर के एन्ना मंदिर के अहाते में करीब 3200 बी सी ई के स्तरों से मिला था।
- मुख्यतः अलग-अलग आकार की मिट्टी की पट्टिकाओं पर लेखन मिले।
- कछारी परिवेश में अपने बाहुल्य और आसानी से पट्टिका निर्माण के कारण मिट्टी उपयोगी थी (देखें **चित्र 7.2**)।
- लेखन ने जैसा रूप लिया उसे अक्षरों के रूप के आधार पर 'कीलाकार' या फन्नी के आकार का लेखन कहा जाता है।
- अक्षरों का कील आकार उस कलम के कारण था जिससे भीगी मिट्टी में दबा कर चिह्न बनाये जाते थे।
- कीलाकार विभिन्न भाषाओं जैसे सुमेरियन और अक्कादियन के लेखन में उपयोग की जाती थी।
- लेखन का सबसे शुरुआती उपयोग मंदिर और महल जैसी बड़ी सार्वजानिक संस्थाओं में होने वाले लेन-देन के रिकॉर्ड के प्रशासकीय उद्देश्यों के लिए हुआ।
- लेखन का उपयोग समान प्रवर्गों वाले शब्दों की तालिका, जिसे 'कोश तालिका' कहा जाता है, के निर्माण में भी होता था, उदहारण के लिए, *पेशों की मानक तालिका* विभिन्न पेशों के 120 शब्दों का अभिलेखन (रिकॉर्ड) करती है।
- तीसरी सहस्त्राब्दी बी सी ई के मध्य से लेखन का उपयोग भूमि, घर, या दासों पर अधिकारों के हस्तांतरण के अभिलेखन के साथ-साथ शाही लेखों और साहित्यिक पाठों के लिए भी होने लगा था।

(स्रोतः जे.एन. पोस्टगेट, 1992)

7.9 लंबी दूरी के संपर्क

कांस्य युगीन सभ्यताओं की कछारी नदी घाटियों में धातुओं, लकड़ी, और अधिकांश प्रकार के पत्थरों की कमी थी। तांबे और टिन पर निर्भरता तथा कछारी घाटियों में उनकी विरलता का अर्थ था कि धातुओं की प्राप्ति अधिकतर बहुत दूर से होती रही होगी। इस प्रकार कांस्य युगीन दुनिया काफी विस्तृत थी। सीमांत क्षेत्र अधिकतर भौतिक विशिष्टताओं द्वारा निर्धारित होते थे, यथा नदियाँ या पहाड़ी शृंखलाओं से, परन्तु विभिन्न इलाकों में आमतौर पर राज्य द्वारा उनका सीमांकन, रख-रखाव, और प्रशासन किया जाता था। अतः ज़रूरी सामग्री विभिन्न तरीकों से लायी जाती थी। राज्य कच्चा माल प्राप्त करने के लिए अभियानों का आयोजन करते थे, जैसे पत्थरों और धातुओं के लिए मिस्रियों ने सिनाई पर चढ़ाई की। मेसोपोटामियाई मंदिर निर्माण तथा जहाज़-निर्माण के लिए उच्च कोटि की इमारती लकड़ियों, और सजावट के लिए कीमती पत्थरों जैसी जरूरी सामग्रियों की प्राप्ति के लिए शासकों के प्रयत्नों पर निर्भर थे। मिथकों और कहानियों से इसकी कुछ जानकारी मिलती है। ऐसी ही एक कहानी उरुक के राजा एंमेरकर और एन्ना के मंदिर को सजाने के लिए लाजवर्द, कार्नेलियन और ऐसी ही अन्य दूसरी कीमती चीजें पाने के लिए पहाड़ों की सात शृंखलाओं पार अरत्ता नामक भूमि के राजा के साथ उसके समझौते के बारे में है। दूत आते-जाते हैं और कुछ समय बाद कीमती सामानों का एक जखीरा अनाज लदे गदहों के एक कारवाँ के बदले प्राप्त किया जाता है। कहानी का एक हिस्सा यूँ हैः

> स्वामी ने तब अपना मुख्य भंडारा खोल दिया... अन्नागार की जौ को उसने पूरी तरह तोला, (यहाँ तक कि) टिड्डी के खाने के हिस्से को भी जोड़ना नहीं भूला। बोझा ढ़ोने वाले गदहों को लादने के बाद – बच गए गदहों को एक किनारे लगाने के बाद – राजा, गहरी प्रज्ञा का स्वामी, उरुक का स्वामी, कुलाबा का स्वामी ने उनको सीधे अरत्ता के लिए रवाना किया। अरत्ता में लोग सूराख से निकली चींटियों की तरह भरे-पूरे घूम रहे थे... दूत के अरत्ता पहुंचने के बाद, अरत्ता के लोग भारवाहक गदहों को आश्चर्य से देखते खड़े हो गए। अरत्ता के प्रांगण में अन्नागार की जौ को दूत ने पूरी तरह तौला, (यहाँ तक कि) टिड्डी के खाने के हिस्से को भी जोड़ना नहीं भूला, ऐसा लगा मानो स्वर्ग की बारिश और चमकते सूर्य की तरह अरत्ता धन-धान्य से भर गया। जब तक देव-गण अपनी शय्या पर साथ-साथ लेटे तब तक अरत्ता अपनी भूख मिटा चुका था (**पोस्टगेट, 1992 से उद्धृत**)।

इसी तरह उरुक के अर्द्ध-मिथकीय राजा गिलगमेश का मिथक हमें बताता है कि कैसे वह एक मंदिर हेतु देवदार वृक्ष लाने के लिए आज के लेबनान जैसे सुदूर उत्तर स्थित 'देवदार वन' तक चला गया था। जिस काम को आमतौर पर छह सप्ताह लगते उसे वह तीन दिनों में कर देता थ, जो कि मिथकों में बहुत सहज है, लेकिन इससे कच्चे माल की प्राप्ति हेतु होने वाले आक्रामक अभियानों का पता चलता है।

गिलगमेश का महाकाव्य

- स्टेफ़नी डैली (1989) लिखते हैंः '*गिलगमेश का महाकाव्य* कीलाकार अक्कादियन में लिखी सबसे लंबी और महान् साहित्यिक कृति है। एक ऐसा आदमी जिसके पास मित्रता, धैर्य और जोखिम की, खुशी और गम की अपूर्व क्षमता है, उस एक शक्तिशाली और शक्तिहीन मनुष्य द्वारा यश और अमरता की साहसिक खोज की यह कहानी है...'।
- सबसे आरंभिक लिखित प्रारूप की तारीख़ 2150 बी सी ई की है, लेकिन दूसरी अन्य कहानियों की तरह संभवतः मौखिक रूप में यह पहले से ही प्रचलित थी।
- इसे महाकाव्य माना जाता है क्योंकि यह एक अर्द्ध-ऐतिहासिक और आंशिक रूप से मिथकीय चरित्र की साहसिक गाथा है, जहाँ देव और देवियाँ हाशिये पर कई किरदार निभाते हैं।
- गिलगमेश का देवत्व उसकी दो तिहाई प्रकृति में है जिसे उसने अपनी माता निन्सुन, देवी वन्य गौ (Lady Wild Cow) से प्राप्त किया था।

- गिलगमेश को एक ऐतिहासिक चरित्र माना जाता है क्योंकि उसके पिता का नाम सुमेरी राजाओं की सूची में उरुक के राजा लुगाल्बंदा के रूप में आता है।
- गिलगमेश की ऐतिहासिकता इस तथ्य से भी प्रकट होती है कि गिलगमेश को उर के तीसरे राजवंश के शासकों का पूर्वज माना जाता है और इससे पता चलता है कि महाकाव्य के संस्करण अलग-अलग शहरों में प्रचलित थे। उर का महान् शासक शुल्गी जिसने 2150-2103 बी सी ई में शासन किया गिलगमेश की कहानियों में बहुत रुचि लेता था। इसके लिए उसने निन्सुन को अपनी माता बताया, इस संदर्भ में उसने गिलगमेश को अपना भाई बनाया।
- स्पष्टतः महाकाव्य में कई छोटी-छोटी कहानियाँ एक साथ बुनी गयी थीं। इसी तरह की एक कहानी गिलगमेश और देवदार वनों के पहरेदार राक्षस हुवावा (या हम्बाबा) की है जो सुमेरी और अक्कादियन संस्करण क्रमशः ज़ाग्रोस पहाड़ों के पूरब और लेबनान के पश्चिम में हैं। यह पुनः अन्य कई मिथकों की तरह कहानियों के कई प्रचलित रूपों की ओर इशारा करता है।
- *गिलगमेश के महाकाव्य* में कई पहलू हैं: मित्रता का मोटिफ (गिलगमेश और एन्किदु), सामग्रियों की खोज (उत्कृष्ट इमारती लकड़ियों के स्रोत देवदार पर्वत पर चढ़ाई), और अमरता की खोज (एन्किदु की मौत पर गिलगमेश की व्यथा)।

चित्र 7.3 : गिलगमेश के महाकाव्य की नव-असीरियन मिट्टी की पट्टिका (संख्या 11) जिसमें 'बाढ़ की कहानी' नामक कहानी वर्णित है

इस पटिया को 'बाढ़ पट्टिका' भी कहा जाता है।

यह पट्टिका वर्तमान में ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन में सुरक्षित है।

साभार: बाबेलस्टोन, 2010

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/7aBritish_Museum_Flood_Tablet.jpg

मेसोपोटामियाई कीलाकार अभिलेख दूर-दराज के इलाकों से संपर्क की जानकारी देते हैं, जैसे दिलमुन (बहरीन के द्वीप के रूप में पहचान), मागन (ओमान के साथ पहचान), और मेलुहा (कई विद्वान हड़प्पा के साथ जोड़कर देखते हैं)। ये अभिलेख मेसोपोटामिया आने वाली सामग्रियों के बारे में बताते हैं, जैसे तांबा, अर्द्ध-कीमती पत्थर, डायोराइट (diorite) और निर्मित सामान। कांस्य युग में बहुत सारी ऐसी सामग्रियाँ जो सीमाओं के आर-पार आती-जाती थीं उनकी प्रकृति संभवतः ऐशो आराम की वस्तुओं की थी या वे शहरों में स्थित बड़ी संस्थाओं के उपभोग में आती थीं।

ऐसे दूरस्थ संपर्क सामानों के आवागमन से कुछ अधिक का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। बहुत संभव है कि लोगों के साथ विचार, तकनीक, मिथक, भाषाएँ, और रीति-रिवाजों की आवाजाही भी होती रही हो।

7.10 कांस्य युगीन समाज

लुइस विर्थ (1938) शहर को सामाजिक आधार पर परिभाषित करते हैं, सामाजिक रूप से असमांगी व्यक्तियों द्वारा बसी हुई सापेक्षिक रूप से बड़ी, घनी और स्थायी बस्ती के रूप में। हमें याद रखना चाहिए कि लोग अक्सर आप्रवास करते हैं और शहर में रहने आते हैं। मेसोपोटामिया में नगरीकरण के एडम्स के सिद्धांत को देखने से हमें नगरों में काफी विविधता नजर आती है। दक्षिणी कछारों के नगर ऐसी जगहें थीं जहाँ लोगों का प्रवासन हुआ और हम बड़ी संख्या में ग्रामीणों और उन लोगों की आवाजाही देखते हैं जो पहले घूमंतू थे और जो अब नगरों में बसने लगे थे। इन आरंभिक नगरों की ओर लोगों का आगमन कई कारणों से हुआ जैसा कि हमने पिछले भाग में विचार किया है। इससे एक ऐसी स्थिति पैदा हुई जहाँ हर कोई एक दूसरे को नहीं जानता था तथा लोग और समुदाय अलग-अलग थे। संभवतः नगरवासियों का अनुभव अब गुमनामी और नगर की सीमा में आमने-सामने आने वाले अजनबी रिश्तों से हुआ।

ट्रिगर (2003: 44) ध्यान दिलाते हैं कि 'सामाजिक सम्बन्धों का मुख्य आधार रक्त-सम्बन्धों और नातेदारी में नहीं था बल्कि सामाजिक विभाजनों का एक श्रेणीक्रम था जो क्षैतिज रूप से सभी समाजों में व्याप्त था तथा वे शक्ति, सम्पदा, और सामाजिक मर्यादा में असमान थे।' साफ़ तौर पर नहीं कहा जा सकता कि ये श्रेणियाँ वर्गों का प्रतिनिधित्व करती थीं। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इन समाजों में संपत्ति, शक्ति, और मर्यादा में घनिष्ठ सम्बन्ध थे। हमें जानकारी मिलती है कि ऐसे व्यक्ति और परिवार थे जिनके पास राजनीतिक शक्ति थी और कुछ ऐसे थे जिनकी आनुष्ठानिक भूमिका थी और ये दोनों उच्च ओहदे और संपत्ति प्रदर्शित करते थे। यह भी संभव है जो लोग बड़ी संस्थाओं जैसे मंदिर या महल में स्थायी रूप से काम करते थे उनके पास अत्यधिक शक्ति और प्रतिष्ठा तथा साथ ही उनकी संपत्ति तक पहुँच थी।

संपत्ति के स्रोत के बारे में यह प्रश्न उठता है कि क्या संपत्ति को भूमि और उस पर स्वामित्व की तरह देखा जाता था? बहुत संभव है कि भूमि नातेदारी-सम्बन्धी समुदायों के नियंत्रण में हो, पर ऐसा भी लगता है कि उच्च-दर्जे के व्यक्तियों ने भूमि के बड़े हिस्से पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया था। इसके उलट कई व्यक्ति ऐसे थे जिनका भूमि पर कोई अधिकार नहीं था लेकिन उन्होंने अपने श्रम के सहारे अर्थव्यवस्था में भागीदारी की। ये लोग अक्सर किसी 'महा गृहस्थी' (ओइकोस) के आश्रित सदस्य होते थे। दूसरी ओर, पूर्णतः निर्भर और निम्न हैसियत के लोग, ख़ासकर महिलाएं और बच्चे, संभवतः युद्ध-बंदी थे।

सामाजिक पदानुक्रम के बावजूद कांस्य युगीन समाजों की पहचान नातेदारी पर आधारित पहले से चली आ रही परम्परा से संबंधित थी। ऊपर हमने देखा कि नातेदारी सम्बन्धी समुदाय भूस्वामित्व के सन्दर्भ में अस्तित्व में बने रहे। आरंभिक मेसोपोटामियाई समाजों ने सामूहिक

स्वामित्व की प्रथा का पालन किया जो संभवतः अधिक व्यावहारिक था क्योंकि निजी स्वामित्व जोत की ज़मीन को विखंडित करता जाता। भूमि पर संयुक्त नियंत्रण का मतलब यह भी था कि सबसे अच्छी भूमि (मसलन जो नदी या सिंचाई नहरों के समीप हो) पर खेती एक ही परिवार के द्वारा नहीं की जा सकती थी, और उन्हें लगातार बदला जाता था। मिस्र में लोगों के समुदाय राज्य के बड़े निर्माण प्रोजेक्ट जैसे पिरामिडों के निर्माण हेतु अपने श्रम का अल्पकालिक दान करते थे। बहुत संभव है कि राज्य दैनिक राशन आवंटन द्वारा उनके ठहरने और खाने-पीने की व्यवस्था करता रहा हो।

कांस्य युगीन समाज धर्म से भी काफी प्रभावित थे। ब्रूस ट्रिगर (2003: 409) ध्यान दिलाते हैं कि 'मिस्रवासियों के पास ''धर्म'' के लिए कोई शब्द नहीं था। धर्म दैनिक जीवन से अभिन्न था... प्राचीन मिस्र में राज्य के काम-काज, रोज़मर्रा की ज़िन्दगी, और भौतिक संस्कृति के सभी पक्ष धार्मिक विश्वासों और प्रतीकवाद के रंग में रंगे थे।' भविष्यवाणियों पर ज़ोर, कई देवताओं में विश्वास और, शहर के अधिष्ठाता देव-मंदिरों की केन्द्रीय अवस्थितियों में हम धर्म के महत्व को देख सकते हैं। मंदिर शहर के हृदयस्थल भी थे और नगरवासियों का जीवन अधिकांशतः मंदिरों के गिर्द ही घूमता था। ऐसा प्रतीत होता है कि बहु देवों में विश्वास था और प्रत्येक नगर के अपने अधिष्ठाता देव या देवी होते थे लेकिन दूसरे देवों को समर्पित मंदिर भी थे। मंदिर से बहुत अधिक गौरव जुड़ा था और पूजा स्थलों के निर्माण और भवनों के लिए सामग्रियाँ बहुत दूर-दूर से लायी जाती थीं।

जैसा कि हमने ऊपर देखा कि मेसोपोटामिया के बड़े मंदिर स्वयं में एक संस्थान थे। बहुत संभव है कि सत्ता मंदिरों और उसके कर्मचारियों के हाथों में केन्द्रित रही हो और देवताओं को समस्त भूमियों और खेतों का स्वामी समझा जाता हो तथा अनाज, दही, मछली और दूसरी अन्य खाद्य सामग्रियाँ उनको अर्पित की जाती हों। इस प्रकार मंदिर समुदाय के अन्नागार का काम भी करते हों। तीसरी सहस्त्राब्दी के मध्य तक आते-आते मंदिर की सत्ता को मेसोपोटामिया नगर-राज्यों के राजवंशों के उदय से आघात पहुँचा। क्योंकि कहा जाने लगा, 'राजशाही स्वर्ग से उतरी थी'। सत्ता जो पहले विशिष्ट व्यक्तियों और परिवारों के हाथों में केन्द्रित रहती आई थीं, अलौकिक और सांसारिक दोनों प्रकार की शक्तियां, वह अब दो भागों में विभाजित हो गयी। नगर-राज्यों के अनवरत चलने वाले प्रान्तिक युद्ध और योद्धा-सरदारों के उदय ऐसे तथ्य हैं जिसने धर्म से अलग सत्ता-केन्द्रों की राह बनायी।

राजा को हम कुछ खास मौकों पर आह्वान का धार्मिक अनुष्ठान करता हुआ भी देख सकते हैं, मसलन किसी मंदिर-भवन के उद्घाटन पर, या फसली ऋतुओं के आरंभ और अंत पर, बोने और काटने के मौकों पर। यह उस पुरातन अतीत का अवशेष था जब एक ही व्यक्ति सांसारिक और धार्मिक दोनों भूमिकाओं का निष्पादन करता था और जिसमें धीरे-धीरे, समय के साथ विभाजन होता गया और फिर जिन्हें अलग-अलग व्यक्ति करने लगे। इसकी प्रबल संभावना है कि राजा धरती पर ईश्वर का मनुष्य रूप माना जाता था।

धार्मिक प्रवृत्तियों के अतिरिक्त मृत्यु सम्बन्धित सामाजिक अनुष्ठान भी महत्वपूर्ण थे। इनके बारे में शोध पुरातत्त्व से संभव है क्योंकि कांस्य युग के लोग मृतकों को दफनाने की प्रथा का पालन करते थे। दफनाने की प्रथा न केवल आनुष्ठानिक पहलुओं को समझने में कारगर है बल्कि यह भी दर्शाती है कि सामाजिक ऊंच-नीच कैसे काम करती थी। उदाहरण के लिए, कफ़न में लिपटी सामान्य जनों की साधारण क़ब्रों के विपरीत मिस्र के पिरामिड उन आनुष्ठानिक स्थलों को प्रतिबिंबित करते हैं जहाँ समाज की उच्च श्रेणियाँ दफनायी जाती थीं (विस्तार के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई 8** देखें)। पिरामिडों के निर्माण और उनमें जमा संपत्ति दर्शाते हैं कि समाज की उच्च श्रेणियों के हाथों में कितनी अकूत संपदा थी जिसे मरे हुओं के हवाले किया जा सकता था। उर में स्थित राजकीय कब्रिस्तान भी इसी तरह से मृतक के साथ अकूत संपदा के अवतरण का प्रतिबिम्ब है।

बोध प्रश्न-3

1) लेखन के विकास के लिए ज़रूरी कारकों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राचीन मेसोपोटामिया की लिपि का नाम बताएँ। बताएँ कि यह कैसे लिखी जाती थी।

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या कांस्य युगीन अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर थी? धातुओं की इसकी ज़रुरत कैसे पूरी होती थी?

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्राचीन मेसोपोटामिया में मंदिरों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7.11 सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि कांस्य युगीन संसार जटिल था जहाँ विभिन्न आबादियाँ अधिकतर शहरी केन्द्रों में अवस्थित थीं। यह एक ऐसी दुनिया थी जो लोगों के बीच नातेदारी के महत्व को प्रकट करती है, हालांकि लोग शहरी क्षेत्रों में आपस में अजनबी स्थितियों में रहते थे। तांबा और टिन के साथ-साथ अन्य ज़रूरी कच्चे माल पर निर्भर रहने के कारण अलग-अलग इलाकों और विविध समुदायों के बीच विस्तृत आदान-प्रदान संभव हुआ। कांस्य युग अपने पूर्ववर्तियों और परवर्तियों की तुलना में काफी विस्तृत था। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था के

रूप में कांस्य युग, नगरीकरण पर अपने ज़ोर, दूरस्थ संपर्क, सामाजिक विविधता, आदिम राजनीतिक संरचना, विशेषीकृत अर्थव्यवस्था और अपनी सभ्यतामूलक प्रकृति के कारण बहुत महत्वपूर्ण है।

7.12 शब्दावली

बिल्लौर (Chert) : महीन रवायुक्त अवसादी चट्टान जो माइक्रोक्रिस्टलाइन या क्रिप्टोक्रिस्टेलाइन सिलिका जैसे पदार्थों से बनी होती है।

कीलाकार (Cuneiform) : कील या फन्नी के आकार का चिह्न स्वरूप लेखन जिसे सरकंडों के कटे हुए किनारों वाले औज़ार से बनाया जाता था। सुमेरियाई लोगों द्वारा अविष्कृत कीलाकार लिपि लेखन की सबसे आरम्भिक पद्धतियों में एक है।

चित्रलिपि (Hieroghyphs) : प्राचीन मिस्री लेखन तंत्र का एक अक्षर। यह किसी वस्तु का शैलीकृत चित्र होता था जो किसी शब्द, शब्दांश या ध्वनि का प्रतिनिधित्व करता था।

ओइकोइ (Oikoi) : प्राचीन ग्रीक शब्द जिसमें तीन सम्बन्धित लेकिन भिन्न अवधारणायें शामिल हैं: परिवार, पारिवारिक संपत्ति, और घर।

बहुदेववाद : एक से ज़्यादा ईश्वर पर आस्था।

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 7.2 देखें

2) भाग 7.3 देखें

3) a (i); b (iv); c (ii); d (iii)

बोध प्रश्न-2

1) ज़्यादा जटिल आकारों के निर्माण की योग्यता, औज़ार उत्पादन में लाभप्रद, विशेषीकृत धातुकर्मियों का संभावित उद्भव, गतिशीलता। विस्तार के लिए भाग 7.5 देखें

2) भाग 7.6 देखें

3) भाग 7.7 देखें

4) श्रम के विनियोजन की व्याख्या करें। भाग 7.7 देखें

बोध प्रश्न-3

1) विशाल भू-सम्पत्तियों के विविध प्रकार के रिकॉर्ड रखने के लिए। आरंभिक रिकॉर्डों में उल्लिखित विविध अवयवों की सूची बनाएँ। भाग 7.8 देखें

2) भाग 7.8 का बॉक्स देखें

3) नहीं, कांस्य युग की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर नहीं थी। लम्बी दूरी के व्यापार की चर्चा करें। भाग 7.9 देखें

4) भाग 7.10 देखें

7.14 संदर्भ ग्रंथ

एडम्स, रॉबर्ट मैककॉमिक.1972. 'पैटर्नस ऑफ अर्बेनाइज़ेशन इन अर्ली सदर्न मेसोपोटामिया', पी.जे. उको, आर. ट्रिंघम और जी.डब्ल्यू. डिम्बलबे. (संपा.). *मैन, सेटलमेंट एंड अर्बेनिस्म,* लंदनः डकवर्थ. पृ. 735-749.

चाइल्ड, वी.जी. 1930. *द ब्रांज ऐज.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

चाइल्ड, वी.जी. 1950. 'द अर्बन रेवोल्यूशन'. *द टाउन प्लानिंग रिव्यू.* 21(1): 3-17.

चाइल्ड, वी. गॉर्डन. 1957, 'द ब्रांज ऐज'. *पास्ट एंड प्रेज़ेन्ट.* 12 (नवम्बर): 2-15.

डाल्ली, स्टेफनी. 1989. *मिथ्स फ्रॉम मेसोपोटामिया.* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

केम्प. बैरी. 1991. *एनसिएंट ईजिप्ट.* लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज.

पोलॉक, सुसान. 1999. *एनसिएंट मेसोपोटामिया.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

पोस्टगेट, जे.एन. 1992. *अर्ली मेसोपोटामियाः सोसाइटी एंड इकॉनमी एट द डान ऑफ़ हिस्ट्री.* लंदन और न्यूयॉर्कः रूटलेज.

रत्नानागर, एस. 2001. *अंडरस्टैंडिंग हडप्पा सिविलाईजेशन इन द ग्रेटर इंडस वैली.* नई दिल्लीः तूलिका.

ट्रिगर, ब्रूस जी. 2003. *अंडरस्टैंडिग अर्ली सिविलाइज़ेशन्सः ए कम्पेरेटिव स्टडी.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

विर्थ, एल. 1938. 'अर्बेनिस्म एज अ वे ऑफ़ लाइफ'. *अमेरिकन जर्नल ऑफ सोसिऑलजि* 44(1): 1-24.

पी डी एफः

https://www.jstor.org/stable/pdf/503771.pdf?refreqid=excelsior%3Aa01af96041a8c040f1a2a8a8c8b5fbb3

7.15 शैक्षणिक वीडियो

ब्रांज़ ऐज मिनीसीरीज़, भाग 1-3ः
https://www.youtube.com/watch?v=jt1aWllpChs (Part 1)
https://www.youtube.com/watch?v=KLhJc3gS-BQ (Part 2)
https://www.youtube.com/watch?v=mvH2q0q4iDs (Part 3)

ब्रांज़ ऐज कोलाप्सः नेशनल ज्यॉग्राफिक डॉक्यूमेंट्री, 2010ः
https://www.youtube.com/watch?v=t6_VGLy2gKM

इकाई 8 मिस्र की सभ्यता*

इकाई की रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 राजवंश से पहले का मिस्र

8.4 राजवंशों का शासन

8.5 राजत्व और राज्य

8.5.1 प्रशासकीय इकाइयाँ

8.5.2 न्याय

8.5.3 सेना और युद्ध

8.6 समाज

8.7 अर्थव्यवस्था

8.8 धर्म और मंदिर

8.9 बस्तियाँ और स्थापत्य

8.10 मिस्र का पतन

8.11 सारांश

8.12 शब्दावली

8.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.14 संदर्भ ग्रंथ

8.15 शैक्षणिक वीडियो

8.1 उद्देश्य

इस इकाई में हम मिस्र की सभ्यता का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- मिस्र की सभ्यता के स्रोतों का विवरण दे सकेंगे,
- इस सभ्यता के उत्थान के कारणों की व्याख्या कर पाएँगे,
- इस सभ्यता के सामाजिक, आर्थिक, क़ानूनी और धार्मिक संरचनाओं की पहचान कर सकेंगे, और
- मिस्र की सभ्यता के पतन के कारणों को विश्लेषित कर सकेंगे।

8.2 प्रस्तावना

नील की उपजाऊ जमीन ने मिस्री सभ्यता के उद्भव और विकास में सहायता की। हेरोडोटस ने मिस्र को 'नील का उपहार' कहा था। हालांकि नील की सभ्यता मिस्र की पहली सभ्यता नहीं थी। मिस्र की सभ्यता के उदय के काफी पहले से बस्तियों और मनुष्यों के आवागमन के विवरण प्राप्त होते हैं। बदारियन क़ब्रें राजवंशों से पहले के मिस्र के इतिहास को जानने का मुख्य स्रोत हैं। हेलेनिस्टिक (टॉलेमिक) काल, लगभग 323-31 बी सी ई, से पहले के मिस्र का इतिहास राजवंशों में विभाजित है, जबकि 5000-3150 बी सी ई का प्रागैतिहासिक काल

* डॉ सोहिनी बसाक, सेंटर फॉर हिस्टारिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मुख्यतः पूर्व-राजवंशीय काल कहलाता है। जैसा कि हम जानते हैं यह महान् सभ्यता नील नदी के किनारों पर विकसित हुई थी। नदी के तटवर्ती इलाके बस्तियों को भोजन के स्रोत, संसाधन और आर्थिक संपन्नता उपलब्ध कराते थे। फिरौन मेनेस के नेतृत्व में हासिल की गई ऊपरी और निचली घाटियों की एकता ने महान् सभ्यता के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। मिस्र की सभ्यता तीन ऐतिहासिक कालों में विभाजित की जा सकती है – प्राचीन राज्य (लगभग 2649-2040 बी सी ई), मध्य राज्य (लगभग 2040-1550 बी सी ई), और नवीन राज्य (लगभग 1550-1070 बी सी ई) (केनेट, 2008: 5-6)।

8.3 राजवंश से पहले का मिस्र

कृषि की शुरुआत के पहले मिस्र के लोग मौसमी संसाधनों के संग्रह के सहारे घुमंतु जीवन-यापन करते थे। ये संसाधन भंडारपात्रों में इकट्ठे किये जाते थे। पुराशास्त्रियों के अनुसार भविष्य की मिस्री सभ्यता के बीज इसी में अन्तर्निहित थे। यह भंडारपात्र जो पहले पहल 1920 के आस-पास खोजे गए थे अनाज के 800 वेट्स (1 वेट = 13.6 ग्राम) भार वहन करने में सक्षम थे और जिनमें ज़्यादातर जंगली बीज, **एम्मर गेहूं** और दो और छह-पंक्ति वाले जौ शामिल थे। एक भंडारपात्र भरने के लिए कम से कम पैदावार वाली दो या तीन एकड़ ज़मीन जरूरी थी। बीजों की रोपाई अधिकतर अक्टूबर और नवम्बर में ठीक जाड़ों की शुरुआत के पहले होती थी और वो अगले कुछ महीनो में बढ़ते और पकते थे।

पूर्व-राजवंश काल के बारे में साक्ष्यों की कमी के कारण उस काल का पूरा विवरण मिलना मुश्किल है। निचले मिस्री स्थलों से मिली क़ब्रों से परिवार की इकाइयों पर आधारित एक समतामूलक समाज का पता चलता है। निचले मिस्री स्थलों में सामाजिक एकरूपता का पता नहीं मिलता। मेरिमदे (लगभग 4300-3800 बी सी ई) का छोटा सा गाँव अधिकतर कृषक परिवारों की इकाइयों से बना था, जबकि फायुम ए (लगभग 4600-4000 बी सी ई) के नागरिक अधिकतर शिकारी और संग्राहक थे।

निचले मिस्री स्तर से अलग ऊपरी मिस्री स्तर में बदारियन काल (लगभग 4500-3800 बी सी ई) से ही सामाजिक पदानुक्रम का पता मिलता है। बदारियन क़ब्रें अपने आकार और उसमें रखी संपत्ति की विविधता द्वारा मृतकों को प्राप्त विभिन्न हैसियतों का प्रमाण देती हैं (विलकिंसन, 1999: 23, 25)। शवाधान प्रथायें अक्सर समाज के पहलूओं को प्रतिबिंबित करती हैं और प्राप्त क़ब्रों के अनुसार कुछ व्यक्ति दूसरों की तुलना में ऊँचे ओहदों के मालिक थे और सम्पति और संसाधनों तक उनकी पहुँच अधिक थी।

चित्र 8.1: प्राचीन मिस्र के मकबरे से उशाबती मूर्ति, लगभग 1260 बी सी ई
यह गहरा भूरा पत्थर उशाबती, डोरकीपर्स के चीफ, अमेन-एम-आईपेट से संबंधित था
साभार: हेनरी वाल्टर्स, 1923
स्रोत:https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c3/Egyptian_-_Ushabti_Figure_of_Amen-em-ipet_-_Walters_22177.jpg

जैसे-जैसे मिस्र का उद्‌भव एक राज्य (अनुमानतः आरंभिक राजवंश काल के दौरान, अर्थात् लगभग 3100-2686 बी सी ई) के रूप में होता गया वैसे-वैसे सामाजिक अंतर और ऊंच-नीच क़ब्रों के साक्ष्य में अधिक प्रकट होते गए। उदाहरण के लिए, अभिजात्य लोगों की कब्रें वृहत और अलंकृत स्थापत्य वाली थीं जिनमें बड़ी मात्रा में बर्तन, धातु के औज़ार, हथियार और व्यक्तिगत सामान मिलते हैं। राजवंश-पूर्व युग के अंत तक आते-आते स्थानीय अभिजात्य आर्थिक संसाधनों पर एकाधिपत्य स्थापित करने में समर्थ हो गए थे। वृहत मकबरों का निर्माण श्रम और वित्तीय दोनों मामलों में प्रचुर संसाधनों की उपस्थिति का पता देती हैं। अभिजात्य वर्गों के पास दूरस्थ व्यापार के जरिये माल प्राप्ति और कुशल शिल्पियों को मकबरों और क़ब्रों के निर्माण में नियुक्ति की शक्ति थी। राजवंश-पूर्व युग ने अपने सामाजिक अंतरों, संपत्ति के वितरण तथा श्रम-विभाजन वाले मिस्री राज्य के बीज डाले। पदानुक्रम आधारित श्रेणियों के चिह्न वहां पहले से ही मौजूद थे।

8.4 राजवंशों का शासन

प्राचीन समाजों से अलग पुराने राजवंश ने अपने पीछे ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक स्रोत छोड़े हैं। ऐतिहासिक स्रोतों, ख़ासकर जो ग्रीक इतिहासकारों और मेनेथो (एक मिस्री पुजारी) ने लिखे हैं, उनका कहना है कि मिस्र के आरंभिक राजाओं की उत्पत्ति दैवीय थी। दूसरी कई आरंभिक सभ्यताओं और प्राचीन राज्यों की तरह आरंभिक मिस्र के राजा खुद को 'शेम्सु' या देवताओं के सेवक कहते थे। मेनेस को पहले राजवंश (लगभग 2180-2040 बी सी ई) का पहला राजा माना जाता है। समकालीन विवरण इसका मूल 'अर्द्ध-दैवीय प्रेतात्माओं' में मानता है। इससे पहले वे 'रे' के रूप में जाने जाते थे (फ्रैंकफर्ट, 1978: 15)।

मेनेथो का लेखन मिस्र के राजाओं और राजवंशों के अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण ढांचा उपलब्ध कराता है। वह मेनेस के द्वारा मिस्र के एकीकरण (लगभग 3100/3000 बी सी ई) से लेकर सिकंदर द्वारा मिस्र की विजय (332 बी सी ई) तक राजाओं के तीस राजवंशों का वर्णन करता है। मेनेस के शासन का राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव काफी गहरा था। मेनेस ने मिस्र के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। पहले राजवंश के उत्थान ने अपने साथ बड़े पैमाने पर धातु के औज़ारों के उपयोग के तकनीकी विकास के द्वारा लेखन से परिचय कराया। छेनी जैसी धातु के औज़ारों के उपयोग ने पत्थरों और पिरामिडों पर लेखन में सहायता की। इसने स्थायी अभिलेखन को संभव किया जबकि **पपायरस** (एक प्रकार का कागज़ जो एक जलीय पौधे के तने से बनाया जाता था) पर किये गए पुराने लेखन अल्पकालिक होते थे। मिस्र के राजवंश का उद्‌भव ऊपरी और निचले मिस्र के एकीकरण से हुआ था। एकीकरण ने मिस्र की सभ्यता के उत्थान के लिए ज़रूरी संसाधनों और जनशक्ति के बेहतर उपयोग में सहायता की।

पहले तीन राजवंशों में राजा का नाम अलंकृत नहीं था और दृश्य वर्णनों में राजा का नाम एक मुखौटे (*सेरेख*) से घिरा था जिसे देवी ओसिरिस के पुत्र होरस के रूप में पहचाना गया था। आगे आने वाले काल की तुलना में आरंभिक दो राजवंशों का अध्ययन और प्रभेद कुछ हद तक स्थानीय क़ब्रों (एबाइडोस के *मस्तबा* मकबरे) के आकार-प्रकार और स्थान से किया जा सकता है। तीसरा राजवंश पिरामिडों के रूप में शाही क़ब्रों के निर्माण के पहले कदम का गवाह बनता है और इस प्रकार एबाइडोस में आरंभिक राजवंशों का शाही कब्रिस्तान अब राजवंशों के दफनाने के स्थान के रूप में समाप्त हो जाता है। पहले तीन राजवंशों को अक्सर मिस्री सभ्यता की नींव का पत्थर माना जाता है और अक्सर ये आरंभिक राजवंश के नाम से जाने जाते हैं।

चित्र 8.2 : मस्तबा का मकबरा
साभारः जॉन बोड्सवर्थ, 2007
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/ab/Mastaba-faraoun-3.jpg

इस आरंभिक राजवंश के बाद पुराना राज्य अस्तित्व में आया जिसमें राजवंश IV (2613-2494 बी सी ई) से राजवंश VIII (2173-2160 बी सी ई) तक शामिल हैं।[1] चौथे राजवंश के अनंतर शाही नाम ज़्यादा अलंकृत होने लगे और राजा का नाम एक 'अंडाकार परिधि' में घिरा होता था जिसका अंडाकार रूप सूर्य से घिरी हर चीज़ का प्रतीक था। अगले सौ सालों तक राज्य व्यवस्था अराजकता और संशय में घिरी रही और अक्सर इसे 'प्रथम अंतराल काल' कहा जाता है। इसके अंत ने नौवें राजवंश (लगभग 2160-2130 बी सी ई) के साथ एक मजबूत केन्द्रीय सत्ता का मार्ग प्रशस्त किया। ग्यारहवें से आरंभिक तेरहवें राजवंश (लगभग 1803-1649 बी सी ई) के बीच के काल को मध्य राज्य के नाम से जाना जाता है। पहले, इतिहासकार और पुराशास्त्रियों का विश्वास था कि पुराने और मध्य राज्यों के बीच मिस्र की सभ्यता में संरचनात्मक परिवर्तन हुए थे। यह मान्यता वर्तमान खोजों और अध्ययनों के साथ बहुत हद तक बदल गयी है। अब इतिहासकार मानते हैं कि यद्यपि मिस्र की सभ्यता और अर्थव्यवस्था में नयी तकनीकों और जटिल प्रशासन के आने से मध्य राज्य में निश्चित परिवर्तन हुए थे लेकिन आरंभिक से मध्य राजवंशों के बीच निरंतरता के चिह्न भी देखे जा सकते हैं, मुख्यतः ***मात***, राज्य और धार्मिक विश्वासों की अवधारणा में जिनकी चर्चा इस इकाई में आगे की जायेगी।

मध्य राज्य के पश्चात् 'दूसरा अंतराल काल' (XIII से XVII राजवंश तक) आया जो करीब दो सौ सालों का था। इस काल ने विदेशी मूल के राजाओं का शासन देखा और इसे 'हिक्सोस' राजवंश का काल कहा जाता है। अगली पांच शताब्दियों में नया राज्य (XVII से XX राजवंश तक) का गठन हुआ, तत्पश्चात् चार सौ सालों का 'तीसरा अंतराल काल' (XXI से XXV राजवंश तक) आया। इस काल के बाद साएत्स (XXVI राजवंश) का राजवंश आया। 525 बी सी ई में मिस्र पर ईरानियों का कब्ज़ा हो गया और यह अकेमिनिड साम्राज्य का एक हिस्सा हो गया। मेसिडोनिया के सिकंदर ने 332 बी सी ई में मिस्र पर विजय हासिल की।

[1] कुछ विद्वान राजवंश III को भी पुराने राज्य में शामिल करते हैं।

काल	राजवंश	तिथि
राजवंश-पूर्व काल	—	लगभग 5000-3100 बी सी ई
आरंभिक राजवंश	I-II	लगभग 3100-2686 बी सी ई
प्राचीन या आरंभिक राज्य	III-VI VII-X	लगभग 2686-2181 बी सी ई
प्रथम अंतराल काल	XIवें राजवंश का उत्तरार्द्ध- XIIIवें राजवंश का पूर्वार्द्ध	लगभग 2180-2040 बी सी ई
मध्य राज्य	आरंभिक XIII	लगभग 2040-1730 बी सी ई
द्वितीय अंतराल काल	XIII-XVII	लगभग 1730-1550 बी सी ई
नवीन राज्य	XVIII-XX	लगभग 1550-1080 बी सी ई
तृतीय अंतराल काल	XXI-XXV	लगभग 1080-664 बी सी ई
साएत काल	XXVI	664-525 बी सी ई
अंतिम काल (ईरानी आधिपत्य भी शामिल)	XXVII-XXXI	525-332 बी सी ई
सिकंदर द्वारा मिस्र पर कब्ज़ा	—	332 बी सी ई

स्रोतः कुहर्ट, 1995: 124

8.5 राजत्व और राज्य

मिस्र के एकीकरण ने मिस्र की सभ्यता को आधार प्रदान किया। मिस्र में राज्य के लिए कोई शब्द नहीं था। राजतंत्र दैवीय अवधारणा में गुंथा था। मिस्री राजतंत्र का पवित्र चरित्र ही राजा और प्रशासन का प्रतीक था। एक देवता के रूप में राजा के पास ही मिस्र की भूमि और उसके नागरिकों पर परम अधिकार था। बहुदेववादी समाज में राजा के लिए यह ज़रूरी था कि वह विभिन्न देवताओं से रिश्ता कायम करे। राजा और ईश्वर के बीच संबंध स्थापित करने के लिए 'रे' (मिस्र का एक देवता) का पुत्र जैसी उपाधियों का इस्तेमाल किया जाता था, जो कि अक्सर फिरौन को नामित करने के लिए प्रयोग में आता था। इस प्रकार, राजा को बाज (falcon) होरस और 'ओसीरिस के पुत्र' या 'आईसिस के पुत्र' के रूप में भी पहचाना जाता था। बाद की उपाधियाँ विशेष रूप से प्रथम राजवंश के दौरान महत्वपूर्ण थीं क्योंकि इससे शासकों को अपनी वैधता का दावा करने में मदद मिली।

समकालीन ग्रंथों में आनुवांशिक माता-पिता को बहुत महत्व नहीं दिया गया था। सिंहासन के उत्तराधिकारी का निर्णय स्वयं राजा ही करता था। इससे दरबार और शाही परिवार के अन्दर गुटों के निर्माण की सम्भावना रहती थी। इसलिए राजा मनमाने ढंग से नहीं बल्कि केवल *मात* या न्यायोचित आज्ञप्तियों के अनुसार ही कार्य कर सकता था। *मात* की अवधारणा समाज और इसकी संस्कृति के अन्दर स्थिरता और अपरिवर्तित क्रम की वक़ालत करती थी जहाँ फिरौन ईश्वर का प्रतिनिधि होता था। प्रत्येक नए राजा से *मात* को फिर से जारी करने की उम्मीद की जाती थी (मैनुअलियन और शीड, 2015: 2)।

8.5.1 प्रशासनिक इकाइयाँ

मिस्र गांवों, छोटे कस्बों और शाही भूमियों में विभाजित था। इन्हें प्रशासनिक इकाइयों या

नोम्स में समूहीकृत किया गया था जो स्थानीय गवर्नर या *नोमार्च* के नियंत्रण में थे। ऊपरी मिस्र को 22 *नोम्स* और निचले मिस्र को 19 *नोम्स* में बांटा गया था (कुहर्त, 1995: 151)। शाही परिवारों में से अधिकारियों को नियुक्त किया जाता था, जो अपने उच्च जन्म के आधार पर विशेष शाही कार्यों के लिए सबसे उपयुक्त और योग्य माने जाते थे। ऐसा माना जाता था कि वे कुछ हद तक राजा के दिव्य गुण रखते थे (मोरेन्ज़, 1960)। यहां तक कि पिछले फिरौनों के परिवारों को भी सरकारी पदों के योग्य माना जाता था। शाही परिवार का स्थान उच्चतम माना जाता था। हेलवान नगर के प्रारंभिक राजवंश के उच्चतम अधिकारियों के कब्रिस्तान में 10,000 से अधिक कब्रें शामिल हैं जो प्रारंभिक प्रशासन की विशालता को दर्शाती हैं (विल्किन्सन, 1999: 96)। प्रारंभिक राजवंश के निचले पद गैर-शाही व्यक्तियों के लिए भी खुले थे।

प्रशासन शाही परिवार के सदस्यों द्वारा शासित था। सरकारी गतिविधि और शाही कार्यालय मूल रूप से शाही सेवा के कार्यों का विस्तार था। सबसे महत्वपूर्ण आधिकारिक पदनाम वज़ीर या 'सम्पूर्ण भूमि के प्रबंधक' और 'राजा के सभी आदेशों के परामर्शदाता' थे। खनन और विदेशी व्यापार के प्रभारी को 'भगवान का कोषाध्यक्ष' या 'खजांची' कहा जाता था। वज़ीर का पद सबसे महत्वपूर्ण आधिकारिक पद माना जाता था क्योंकि वज़ीर की पहुंच फिरौन तक थी। उसे ओदश था कि सुबह-सुबह वह राजा के यहाँ हाज़िरी दे तथा वह उसके मुख्य कार्यकारी के रूप में काम करता था। प्रारंभ में, इस पद पर शाही परिवार के सदस्यों का कब्ज़ा था, लेकिन बाद में आम लोग भी वज़ीर हुए। प्राचीन साम्राज्य में, शाही प्रशासन आर्थिक और वित्तीय कार्यालयों पर आधारित था। वित्तीय कार्यालयों को अन्नागार (***snwt/snwty***) और खजाने (***pr hd/prwy hd***) में विभाजित किया गया था। राज्य के अन्नागार अधिकारी, राज्य के खजांची और न्याय की उच्च अदालतों के पर्यवेक्षक के पद महत्वपूर्ण थे।

अधिकारियों का कुछ स्तर तक साक्षर होना आवश्यक था। प्रारंभिक राजवंश में, राजनीतिक नियंत्रण के लिए लेखन को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया जाता था तथा सभी प्रशासकों ने लिपिकों की भूमिका निभाई। इससे प्रारंभिक मिस्र के राजवंश को निगरानी और अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण में मदद मिली। प्राचीन साम्राज्य के तीसरे और चौथे राजवंशों के दौरान मिस्री राज्य ने एक बड़ा बदलाव देखा। राज्य एक जटिल-तंत्र बन गया तथा शाही परिवार राज्य के सभी घटकों का प्रबंधन करने में अकेले सक्षम नहीं रहे। इस प्रकार सत्ता के उच्च प्रशासनिक पदों पर, कभी-कभी तो वज़ीर जैसे उच्च पद पर भी, गैर-राजवंशियों को नियुक्त किया गया। कार्यालय में पदों का निर्धारण वंशानुगत दावों पर आधारित नहीं था, और कम से कम सैद्धांतिक तौर पर यह अधिकारियों के सार्वजनिक कर्तव्यों के प्रदर्शन पर निर्भर थे, जैसे कि गरीबों की सहायता करना और उचित निर्णय देना।

चित्र 8.3 : हिक्सोस फिरौन अपोफिस की नाम धारक मुहर

साभार: कीथ शेंगिली-रॉबर्ट्स, 2007

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/a2/ScarabBearingNameOfApophis_MuseumOfFineArtsBoston.png

मिस्री राजवंशों के सबसे महत्वपूर्ण प्रमाणों में से एक वहाँ प्रयोग होने वाली मुहरें हैं। हालांकि प्रारंभिक राजवंशों की मुहरें प्रांतीय प्रशासन पर ज़्यादा प्रकाश नहीं डालतीं और ज़्यादातर राजवंशों और कुलीन वर्गों के बारे में ही बात करती हैं। साक्ष्य के ये शुरुआती पुरातात्विक टुकड़े सैन्य और

राजनीतिक अधिकारियों पर भी प्रकाश नहीं डालते। बाद की अवधि में, सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली मुहर *स्कैरब* थी। इन मुहरों पर सर्पिल रूपांकन और अधिकारियों की उपाधियाँ मध्य राज्य की विशेषताएँ थीं। ऐसी मुहरों पर अभिलेख कभी-कभी स्थानों और देवताओं को संदर्भित करते हैं। *स्कैरब* पर अक्सर शाही नाम खुदे होते थे, खासकर ग्यारहवें राजवंश से लेकर बाद की अवधि तक। हमें हिक्सोस राजवंशों के अधिकतर नामों की जानकारी *स्कैरब* से मिलती है।

8.5.2 न्याय

मिस्री संस्कृति की न्याय प्रणाली धर्म पर आधारित थी। राजाओं में विधीय शक्तियां निहित थीं और वह ***hp*** या कानून, ***wd*** या अध्यादेश और ***tp-rd*** या नियम बनाने और देश में कानून और व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार थे। कार्यकारी अधिकारियों और न्यायपालिका के बीच कोई भेद नहीं था। *मात* की अवधारणा मिस्र की न्याय प्रणाली के मूल में थी जिसे राजा द्वारा परिभाषित और प्रत्याभूत किया जाता था। प्राचीन मिस्र में कुछ संहिताबद्ध कानून थे जैसे कि फिरौन को सर्वोच्च न्यायाधीश माना जाता था और सारे कानून उसी से उत्पन्न होते थे। पांचवें राजवंश से, न्यायिक अधिकारियों, जिसमें वज़ीर भी शामिल थे, को कानूनी मामलों का अधिकार मिला और उन्हें *मात* के पुजारियों' की उपाधि मिली। इस प्रकार उच्चतम न्यायाधीश की भूमिका अदा करना वज़ीर के सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक था। धर्म में न्याय का यह प्रारंभिक संयोजन पूरे मिस्री इतिहास के दौरान कायम रहा। यहाँ तक कि रानियों और अधिकारियों को भी निष्पक्ष सुनवाई के लिए वज़ीर के कार्यालय में एक विश्वासपात्र अधिकारी के साथ ले जाया जाता था (गार्सिया, 2003: 10)।

8.5.3 सेना और युद्ध

प्राचीन मिस्र में हिंसा का इस्तेमाल या युद्ध की मंजूरी राजसी सत्ता तय करती थी। मध्य राज्य के समय से, विशिष्ट हथियारों में निपुणता, जनशक्ति के संगठन, नेतृत्व की कुशलता और युद्ध के अनुभव सिंहासन के किसी भी दावे की बुनियादी विशेषताएं थीं। राज्य सेवा के लिए सैनिकों को उनके नगर या *नोम्स* से बाहर नूबिया में मिस्र के किलों में राज्य सेवा के लिए भेज दिया जाता था, जहाँ उन्हें शहरी प्रशासकों और संतरियों या अनुचरों द्वारा नियंत्रित किया जाता था। सैनिकों की पहचान उनके संबंधित मिस्री नगरों से जुड़ी होती थी। द्वितीय मध्यकाल के युद्धों के दौरान, ऊपरी मिस्र के राज्यपाल और नगर के सेनाध्यक्षों ने स्थानीय सशस्त्र बलों को तैनात करके अपने क्षेत्र का बचाव किया। इस काल के बाद सैनिक संगठन बदला और मिस्र में पेशेवर सेना बहाल की गई। हालांकि भाड़े के सैनिकों की तैनाती और युद्ध के कैदियों को शामिल करना मिस्र इतिहास में आम था (निर्स, 2003: 640-642)। आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होने से, नए राज्य के दौरान सेना और मिलिशिया में विस्तार हुआ।

बोध प्रश्न-1

1) राजवंश-पूर्व युग ने मिस्र की सभ्यता के उदय के लिए किस प्रकार मार्ग प्रशस्त किया?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्राचीन मिस्र में प्रशासन के विभिन्न घटक क्या थे?

.....

.....

.....

.....

.....

3) *मात* पर एक नोट लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) मिस्र की सैन्य संरचना का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.6 समाज

मिस्र का समाज न्यायिक समानता की अवधारणा पर आधारित था जहाँ राजा न्यायिक निर्णयों का प्रतिमान होता था। मिस्र में आम लोगों के लिए जीवन कठिन था। यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि क्या लोग ज़मीन से बंधे हुए थे और सार्वजनिक कार्यों के लिए उनसे जबरदस्ती कार्य कराया जाता था। हालांकि निर्माण कार्य में लगे मजदूरों को ज़्यादातर अनाज और जौ के रूप में भुगतान किया जाता था, जो केवल उनके जीवित रहने मात्र के लिए पर्याप्त था। निर्माण कार्यों में लगे श्रमिकों के लिए मौद्रिक पारिश्रमिक के प्रमाण हमें शायद ही कहीं मिलते हैं।

कभी-कभी शिलालेखों में चित्रित बाजार के दृश्य, साधारण स्थानीय बाजारों की एक तस्वीर प्रदान करते हैं, जहां ज़्यादातर खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ, लकड़ी के सिरहानों (मिस्र के लोग तकिए की जगह इसका उपयोग करते थे), गहने, कपड़े, मछली पकड़ने के हुक और धुरी-तकली जैसी वस्तुओं का आदान-प्रदान किया जाता था। शाही अनाज प्रणाली के साथ ही आवश्यक वस्तुओं के आदान-प्रदान के लिए बाज़ार की उपस्थिति विनिमयों के संचलन को इंगित करती है।

प्रारंभिक साहित्य और दर्शन धर्म पर आधारित थे। बाद के चरण में साहित्य धीरे-धीरे धर्मनिरपेक्ष होते गए। मिस्र की प्रेम कविता एक ऐसी ही शैली है। मंच पर खेले गए नाटक नाट्य-कला की उपस्थिति के संकेत देते हैं। ऐसा माना जाता है कि देवताओं के मुखौटे मंचन की सामग्री की तरह बनाये जाते थे जिसका इस्तेमाल नाट्य-कला में होता था। धार्मिक उत्सवों के दौरान पुरोहित भी मुखौटों का इस्तेमाल करते थे (वोलिंस्की, 1987: 22)।

भाषा जो प्रारंभ में केवल प्राथमिक स्तर की थी धीरे-धीरे पेचीदा होती गयी और व्याकरण की

अवधारणा ने जन्म लिया। मिस्री साहित्य की तरह ही विज्ञान का मूल भी धर्म था। उदाहरण के लिए, प्राकृतिक मृत्यु को भी ईश्वर का सन्देश माना जाता था। चिकित्सीय उपचार अधिकतर जादू और मिथकों से संबंधित थे। शुरुआत में चिकित्सीय पेशा पुरोहित के पद से जुड़ा था और प्रायः धार्मिक अनुष्ठानों से भरपूर था। चिकित्सा विज्ञान की तरह ही विज्ञान की अन्य शाखाएँ भी धर्म से जुड़ी थीं। खगोलशास्त्रीय ज्ञान, शवाधान अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे ताकि जीवित और मृतक के बीच संबंध स्थापित किया जा सके।

लेखन प्रणाली

करीब 3100 बी सी ई में, चित्रित या खुदी हुए सजावट वाले बर्तनों के टुकड़े मिस्र की पहली लिखित वस्तुएं थीं। लिखाई 'प्रवाही' (cursive) होती थी और इसका इस्तेमाल मुखियाओं या शासकों के नाम, या उनके मकबरों/घरों में माल वितरण के अभिलेखन के लिए होता था। मिस्र में 'चित्रलिपि' द्वारा लेखन कुछ समय बाद शुरू हुआ, इसका प्रयोग मन्नत की वस्तुओं यानी ऐसी वस्तुएं जिनका इस्तेमाल मन्नत मांगने के लिए, मंदिरों की दीवारों और मुखियाओं और शासकों के मकबरों पर, और मकबरों में जमा वस्तुओं से बंधे छोटे हाथीदांत के टैग पर होता था। इसका इस्तेमाल शाही वीरता कर्मों के उच्चतम प्रतीकों की नक्काशी, पत्थर की पट्टिकाओं (palettes), और आनुष्ठानिक राजदंड़ों (maces) पर लेखन करने के लिए किया जाता था। एक अविकसित मिस्री राज्य की पहली राजधानी हिराकोंपोलिस में, मंदिर में आनुष्ठानिक रूप से दफन की गयी पुरानी चीजों के गुप्त भंडार में कई लिखित वस्तुएं पाई गयीं। तस्वीरें, मुख्य रूप से पहचानने योग्य वस्तुओं की तस्वीरें, लेकिन कभी-कभी व्यक्तियों और देवताओं के नामों की तस्वीरें भी, लेखन के एक दूसरे प्रकार को इंगित करती थीं। जबकि साधारण रिकॉर्ड रखने के लिए, कुछ स्ट्रोक के साथ लिखा गया, कर्सिव लेखन, मिस्री समाज की चित्रलिपि या औपचारिक लेखन का एक अनूठा सौंदर्यपरक गुण था। कालिख की पोटली, रंगों को गढ़ने वाला लाल गेरु और कभी-कभी दूसरे रंगों से लैस, सरकंडे की लेखिनी, पतले और मोटे ब्रशों और नुकीली खुरचनी का इस्तेमाल करता लेखक एक कलाकार होता था। संकेतों को बराबर दूरी से बनाया जाता था, और उनके रूप मानकीकृत थे। जीवित चीजों को खाके (profile) में, लेकिन सींग और आंखें सामने की तरफ और इसी तरह अन्य चीजें होती थीं। कुछ मामलों में लेखन एक दूसरे में घुल-मिल जाता था, जिसे हम नक्काशी या चित्रकारी कहेंगे। कभी-कभी कला के एक सहायक के रूप में, मंदिर या मकबरे की दीवार पर चित्रकला के साथ-साथ चित्रलिपि लेखन भी हुए। यह प्रवाही (कर्सिव) रूप समय के साथ बदलता गया, जबकि उसके साथ प्रयोग में आने वाले औपचारिक और सौन्दर्यपरक चित्रलिपि लेखन में समय के साथ बहुत कम बदलाव आये।

स्रोतः शेरीन रत्नागर, 2017 (पुनःमुद्रित), 'राइटिंग एंड आर्टिस्टिक एक्सप्रैशन', खंड 2 : कांस्य युगीन सभ्यता, एम एच आई-01: *प्राचीन और मध्ययुगीन समाज*, नई दिल्लीः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालयः पृ. 34-351.

8.7 अर्थव्यवस्था

राज्य-कोष मुख्यतः लिनन, शराब और तेल जैसे सामानों से सम्बंधित था। दूसरी तरफ, अन्नागार, अन्न के संचयन के लिए उपयोग में आते थे। क्षेत्रीय और निजी अन्नागार और राज्यकोष भी मौजूद थे। प्राचीन राजवंश में भूमिकर राजस्व का एक महत्वपूर्ण स्रोत जान पड़ता है। खनन और उत्खनन परियोजनाओं ने भी केंद्र सरकार को खनिज संपदा प्रदान की। समकालीन साक्ष्य बताते हैं कि राज्य ने प्राचीन मिस्र की खनन गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया था। तीसरी सहस्राब्दी बी सी ई में धन को पैसे में नहीं मापा जाता था, क्योंकि मुद्रा प्रणाली शुरू नहीं हुई थी। वस्तु-विनिमय का व्यापक रूप से विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता था। अर्थव्यवस्था खाद्य पदार्थों, अनाज, मवेशी, रोटी, बियर और लिनन के आदान-प्रदान पर आधारित थी (वार्डन, 2014: 233)। वस्तुओं का मूल्य तांबे, चांदी या अनाज की मात्रा में व्यक्त किया जाता था। तांबा या ***डब्न* (dbn)** या ***डेबेन* (deben)** जिसका वजन .91 ग्राम था नवीन राज्य में विनिमय का एक प्रमुख रूप प्रतीत होता है। चांदी का इस्तेमाल केवल रामसेस तृतीय के शासनकाल के शुरुआती वर्षों में दिखाई देता है (लगभग 1187-56 बी सी ई)। हालांकि, अनाज का उपयोग टोकरी जैसी सस्ती वस्तुओं के मूल्य को व्यक्त करने के लिए किया जाता था। तांबे का वजन 1 *खार* (*khar*; लगभग 48 किलोग्राम) अनाज के रूप में किया जाता था।

मिस्र के लोग गेहूं और जौ जैसी प्रमुख खाद्य फसलें और पटसन और पपायरस (भोजपत्र) जैसी वाणिज्यिक फसलें भी उगाते थे। प्रत्येक वर्ष नील नदी में आने वाली बाढ़ मिस्र के किसानों के लिए अभिशाप थी, लेकिन यह मिट्टी की प्रजनन क्षमता को बहाल करने में भी मदद करती थी। सिंचाई की मदद से किसान लगभग 800 हेक्टेयर जमीन में खेती करते थे। सिंचाई के सबसे पुराने साक्ष्य 3100 बी सी ई के हैं। *शदूफ़* नामक मेसोपोटामियन जल उत्तोलक यन्त्र 1500 बी सी ई के बाद इस्तेमाल किये गए (नोमान एवं क्वोसी, 2017: 18)। इस तकनीक से किसानों को गर्मी के शुष्क मौसम में फसलों के उत्पादन और कृषि के विस्तार में मदद मिली। बाढ़ का पानी घटने के बाद, अक्टूबर से मार्च तक नए बीज बोये जाते थे। सिंचाई को पवित्र काम माना जाता था और प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं राज्य द्वारा प्रायोजित थीं। इससे नील घाटी के बाहर कृषि के विस्तार में मदद मिली। सिंचाई कार्य की निगरानी स्थानीय अधिकारियों द्वारा की जाती थी। *नोम्स* (प्रशासनिक इकाइयां) स्थानीय सिंचाई इकाइयों के रूप में विकसित हुईं। स्थानीय मजदूरों को नालों के तलकर्षण, नहरों और गड्ढों की खुदाई, मिट्टी के बांधों का निर्माण, ख़ंदक़ घाटी बनाने और डोलचे से पानी खींचने के लिए नियोजित किया जाता था (ह्यूजेस, 1992: 17)। सरकारी अधिकारी देश में अनाज की आपूर्ति में उतार-चढ़ाव को रोकने और अनाज की आपूर्ति को नियंत्रित करने के उपाय करते थे। राज्य के हस्तक्षेपों के बावजूद, फसल की विफलताओं के समय, बाढ़ और अकाल की समस्याओं ने अक्सर मिस्र की कृषि को जकड़े रखा।

प्राचीन मिस्र में खेती

दक्षिण एशिया की तुलना में गेहूं, जौ, सेम, चना और अन्य रबी फसलों की खेती के लिए मिस्र का पर्यावरण अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल था। रोपण से पहले सिंचाई के लिए मिस्र के लोगों को क्षेत्रीय प्राकृतिक घाटियों (basins), उसे काटने, या जरुरत के हिसाब से उसकी दीवारों को उठाने और एक स्थान से दूसरे स्थान तक उसके प्रवाह को दिशा देने का काम करना पड़ता था ताकि ज़्यादातर क्षेत्र जलप्लावित रहे। कभी-कभी प्राकृतिक बेसिन को मिट्टी की नीची दीवारों के साथ विभाजित करने की आवश्यकता होती थी, या अतिप्रवाहित नालों को गहरा किया जाता था।

(स्रोतः एम एच आई-01, खंड 2, इकाई 6: 8)

चित्र 8.4 : नवीन राज्य काल का मिस्री भित्ति चित्र जिसमें एक किसान को एक *शदूफ़* के साथ काम करते दर्शाया गया है; आईप्यू मकबरा (जो नील नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है)

साभारः रॉजर्स फण्ड, 1930

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/1/16/Garden_Scene%2C_Tomb_of_Ipuy_MET_vs2973.jpg

वर्तमान लेबनान के तट पर बाइबलोस में पूर्व-राजवंश काल की वस्तुएं पाई गयी हैं। मिस्र की सभ्यता के व्यापार और वाणिज्य में राज्य की एक महत्वपूर्ण भूमिका थी। प्रथम राजवंश से ही ग्राम स्तर से ऊपर के व्यापारों को राज्य नियंत्रित करता था (कर्टिन, 1984 : 71-74)। मिस्र के समकालीन रिकॉर्ड 2000 बी सी ई से पहले व्यापारियों का उल्लेख एक अलग इकाई के रूप में नहीं करते, यद्यपि ऐसा माना जाता है कि बड़े स्तर का व्यापार शाही अन्नागारों और राज्य अधिकारियों से जुड़ा था। पूर्वी भूमध्यसागर के अन्य हिस्सों के साथ मिस्र का व्यापार आमतौर पर सरकार के नियंत्रण में था, लेकिन विदेशी व्यापारियों की उपस्थिति के सबूत भी मिलते हैं।

इस बात के पुरालेखीय साक्ष्य मिलते हैं कि मिस्र के शासकों ने अपने खोजी दलों को पड़ोसी क्षेत्रों में वस्तुओं और माल को व्यापार या अधिग्रहण से हासिल करने भेजा था। वर्तमान समय के लेबनान और मिस्र का एक समृद्ध व्यापारिक संबंध था। दक्षिण में मिस्र के व्यापार के लिए सरकार ने नील नदी से लेकर लाल सागर और आज के यमन तक अभियान भेजे थे। ये आधिकारिक अभियान 2500 बी सी ई से शुरू हुए और ये मुख्य रूप से विलासिता की वस्तुओं जैसे लोबान, आबनूस, गंधरस (myrrh) और सोने का व्यापार करते थे। राजवंशीय काल के दौरान सीरियाई लकड़ी के आयात के सबूत भी मिलते हैं। लेवांट के बंदरगाह शहर बाइबलोस के साथ मिस्री संपर्क के काफी प्रमाण मिलते हैं। मिस्र के लोग ताबूतों के लिए और नौकाओं और मूर्तियों को बनाने के लिए लकड़ी आयात करते थे, क्योंकि मिस्र में अच्छी गुणवत्ता वाली लकड़ी उपलब्ध नहीं थी। उत्तरी सीरिया के एबला और सिनाई रेगिस्तान के फ़िरोज़ा (turquoise) की खानों में भी नियमित अभियान भेजे जाते थे (कुहर्त, 1995: 145)। मिस्र के समुद्री व्यापार और समुद्र में उनकी बढ़ती गतिविधियों के साक्ष्य जहाज़ों और नौकाओं के चित्रों में प्रलेखित हैं। मेसोपोटामियन और सिंधु सभ्यता की नौकाओं की तरह मिस्र की नौकाओं में चौकोर पालियां थीं और फलक की नावों को बेंत से बांध दिया जाता था, हालांकि कांस्य और तांबे जैसी धातुएं भी जोड़ने में कुछ भूमिका निभाती होंगी।

रिचर्ड एल. स्मिथ ने एक बहुत ही रोचक विचार सामने रखा है। उनके अनुसार प्रारंभिक राजवंशों में राजपरिवारों द्वारा किया जाने वाला विदेशी व्यापार उपहार-विनिमय के तंत्र पर आधारित था। एक साक्ष्य दर्शाता है कि फिरौन ने बेबीलोन के राजा को उपहार के रूप में 26 पाउंड सोने, 6.5 पाउंड चांदी, 18.5 पाउंड कांस्य, कपड़ा, सुगंधित तेल से भरे 1000 से अधिक पत्थर के जार, 163 पत्थर के खाली जार, अंगूठियां, हार, दर्पण, हाथीदांत के बक्से तथा अन्य वस्तुएं भेजीं। बेबीलोन के राजाओं से, मिस्रियों ने घोड़े और रथ, चांदी, कांस्य, लाजवर्द (lapis lazuli) और तेल प्राप्त किया। इस प्रकार, शाही व्यापार अनिवार्य रूप से उपहारों के आदान-प्रदान पर आधारित था (स्मिथ, 2009: 48)। सेद्ल्मेयर का मानना है कि मिस्र आर्थिक रूप से धनाढ्य और सांस्कृतिक रूप से अधिक जटिल होता गया। समृद्धि में वृद्धि हुई, और सामान्य मकबरे काफी बड़े होते गये और दफ़नाने के लिए उत्कृष्ट दफन सामग्रियों का इस्तेमाल होने लगा (जी, 2015: 65)।

8.8 धर्म और मंदिर

देवता को व्यक्ति रूप में पहचाना जाता था, जो अक्सर कुछ विशेषताओं या पदों से जुड़ा होता था और उनके नाम या रूप से उन्हें परिभाषित किया जाता था। यह माना जाता था कि इंसानों की तरह देवताओं का प्रादुर्भाव भी एक आदिम ईश्वर यानि देवी-देवताओं में सबसे पहले अथवा मूल देवता से हुआ था। देवता हमेशा अमर नहीं होता था, और यह माना जाता था कि चंद्र-देव थोथ ने देवताओं के साथ-साथ मनुष्यों के जीवनकाल की भी गणना की थी।

मिस्र के तीन सबसे महत्वपूर्ण देवताओं – रे/रा, ताह और ओसीरिस के नामों की व्युत्पत्ति अभी तक निश्चित नहीं है। रे के मामले में 'साथी' के रूप में नाम की व्याख्या करने के प्रयास

किए गए, चंद्रमा के साथी के रूप में सूर्य की भूमिका के लिए एक भ्रम के संदर्भ के रूप में। दूसरी तरफ, ताह को अक्सर मूर्तिकला और ओसीरिस को 'आंख के आसन' से जोड़ा जाता है। नीथ 'भयानक' है और युद्ध की देवी का प्रतीक है, आइसिस ने अपना नाम 'सिंहासन' से प्राप्त किया, अमुन 'छुपा हुआ' अथवा वायु देवता था, जिसने मिस्र के धर्म में बहुत महत्व प्राप्त किया। हैथोर नाम 'होरस के घर' और थोथ को देवताओं के संदेशवाहक के रूप में तथा अतुम या 'जो पूर्णता है' बुद्धि से जुड़ा हुआ है के रूप में नामित किया जाता है (मोरेन्ज़, 1960: 23-24)।

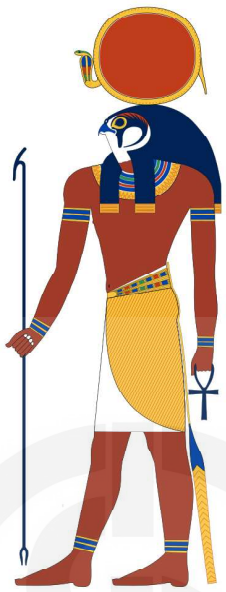

चित्र 8.5 : प्राचीन मिस्र के देवता रा का चित्रण

साभार: जेफ़दहल, 2007

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/0/0d/Re-Horakhty.svg

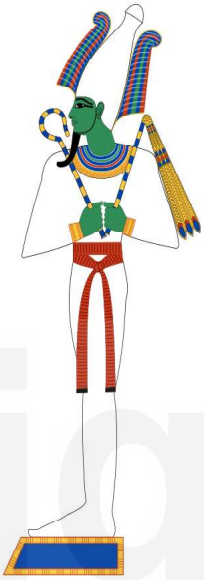

चित्र 8.6 : प्राचीन मिस्र के देवता ओसीरिस का चित्रण

साभार: जेफ़दहल, 2007

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/cc/Standing_Osiris_edit1.svg

मिस्र में, राजा द्वारा विभिन्न परोपकारी कृत्यों के माध्यम से देवताओं की सेवा की जाती थी जैसे मंदिर बनाना, प्रतिमाओं का दान करना या उन्हें पुर्नस्थापित करना या उनकी सफाई करवाना। ज़मीन मुख्यतः मंदिर और राज्य के नियंत्रण में थी, और अक्सर इन दोनों के बीच विभाजन का अभाव था। फिरौन अक्सर नए शासन-क्षेत्र स्थापित करते थे, जिसमें अक्सर पूर्ववर्तियों का सफाया कर दिया जाता था। मंदिर की ज़मीन अक्सर फिरौन के नाम से जोती जाती थी। मिसाल के तौर पर, हालांकि देर अल-मदीना (प्राचीन मिस्र का एक गाँव) के कर्मचारी राजा द्वारा नियुक्त किये जाते थे, उनका भुगतान मंदिरों द्वारा किया जाता था (जांसेन, 1995: 182)। मुख्य मंदिरों के आवंटित क्षेत्रों का नियंत्रण राज्य के स्थानीय अधिकारियों के हाथों में था। अनाज की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए मंदिरों में अन्नागार होते थे। मंदिर के अन्नागारों ने पुरोहितों की एक बड़ी संख्या को सहारा दिया जो निर्वाह के लिए मंदिरों या मजारों पर निर्भर थे (टीटर, 2011: 16-18, 36)।

मंदिरों और देव-प्रतिमाओं की देखभाल करना पुरोहितों की ज़िम्मेदारी थी। आम लोग त्योहारों में देवताओं को सम्मानित और महिमामंडित कर उनकी सेवा करते थे। देवताओं और मनुष्यों के बीच का रिश्ता परस्पर निर्भरता का था जहां कृतज्ञता और धर्मनिष्ठा भगवान से आशावादी उम्मीदों के साथ सह-अस्तित्व में थी।

पुरोहित का पद

समकालीन आर्थिक दस्तावेजों के अनुसार, पुरोहित का पद मिस्र के समाज में एक प्रमुख

संस्था थी। पांचवे राजवंश के दौरान, नेफेरिर्करे की अंत्येष्टि उपासना-पंथ में पुरोहित के पद से 250 से 300 पुरोहित जुड़े थे। फायूम और तेयूद्जॉय में अनुबिस जैसे छोटे मंदिर में करीब 50 से 80 पुरोहित कार्यरत थे।

पुरोहित या *Ka* का पद मिस्र के समाज और अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग था। प्रारंभ में पुरोहितों के पदों पर ज़्यादातर शाही परिवार के सदस्यों का दबदबा था। हालांकि, जैसे-जैसे प्रशासन जटिल होता गया, बड़ी संख्या में गैर-शाही लोगों को पुरोहितों के पदों पर भर्ती किया गया। पद वंशानुगत थे और अक्सर परिवार के भीतर एक से दूसरे को स्थानांतरित किए जाते थे। पुरोहितों के पद विभिन्न प्रकार के थे जैसे *खेरी बेबेत* या *लेक्टर* (वाचक) पुरोहित, *सेम* पुरोहित, *हेम नेत्चेर* और *इव्न्मुतेफ़* (Iwnmutef) पुरोहित। *लेक्टर* पुरोहित को पढ़ने की उनकी विशिष्ट क्षमता से पहचाना जाता था और उनका मुख्य कर्तव्य मंदिर और शवाधान के अनुष्ठानों में विशिष्ट धार्मिक ग्रंथों को पढ़ना था। प्राचीन साम्राज्य में, *लेक्टर* शाही परिवार से संबंधित थे, लेकिन मध्य साम्राज्य के काल से कोई भी ज्ञानी व्यक्ति *लेक्टर* पुरोहित बन सकता था। *लेक्टर* प्रशासन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। देवता के पिता का संबंध देवता के प्रतिदिन के चढ़ावों या दिवंगत आत्माओं को दिए जाने वाली भेंट से था। वे ज़्यादातर अमुन, ताह और मिन (प्रजनन क्षमता और शक्ति से जुड़े) पंथ से संबंध रखते थे। नवीन साम्राज्य में, वे मंदिरों में भोजन और अन्य आवश्यकताओं की आपूर्ति करते थे। *सेम* पुरोहित की उपाधि प्रतिष्ठित थी और वह अक्सर अनुबिस और खनम संप्रदाय से संबंधित होता था। अठारहवें राजवंश के मध्य से *सेम* ने मंदिरों की भूमि, पुरोहित और कारीगरों की देखरेख करने वाले पहले पुरोहित के रूप में कार्य किया। *हेम नेत्चेर* के पास बड़ी आर्थिक शक्ति थी, क्योंकि वह प्रतिदिन भेंट की जाने वाली उपयोगी सामग्रियों का निरीक्षक था और अक्सर स्थानीय गवर्नर के रूप में कार्य करता था। मंदिर के प्रांगण के कर्तव्यों की जिम्मेदारी *हेम नेत्चेर* के निचले पदाधिकारियों की थी। *इव्न्मुतेफ़* अंत्येष्टी के पुरोहित थे जो *सेम* के साथ काम करते थे और शाही और निजी दोनों की अन्त्येष्टी उपासना पद्धति से वास्ता रखते थे। पहला पुरोहित राजा स्वयं को मानता था। मंदिरों या मकबरों की प्रतिमाओं या देवता के चढ़ावों से पुरोहितों का भुगतान वस्तु के रूप में किया जाता था।

अधिकतर पुरोहित दूसरे पेशों से भी जुड़े होते थे जैसे व्यापार या सरकारी कर्मचारी। सांसारिक और धार्मिक पेशों का संयोजन पूरी मिस्री सभ्यता के दौरान देखा जा सकता है। उदाहारण के लिए, छठे राजवंश से संबंधित हरखुफ विदेशियों के पर्यवेक्षक, राजा के मुहर-अधिकारी और एक *लेक्टर* पुरोहित थे। इसी तरह, उन्नीसवें राजवंश से ओनूरिस्मोस नाम के एक पुरोहित को देवता के पिता और ओनूरिसमोस के महापुरोहित के साथ-साथ शाही लेखक और राजा के कुलीन सैनिकों के लेखक की पदवी भी प्राप्त थी। बाइसवें राजवंश से नेबनेत्चेरू कर्णक में अमुन के पुरोहित थे और सारे स्मारकों संबंधी सभी कार्यों के प्रमुख की भूमिका भी निभाते थे।

पुरोहित का चयन किसी विशेष राजवंश में पंथ विशेष की महत्ता पर निर्भर था। बाद के ऐतिहासिक काल के विपरीत, प्राचीन मिस्र में कोई मठवासी संगठन नहीं था और पुरोहित गांवों में रहते थे और एक पारिवारिक जीवन जीते थे। यद्यपि उन्होंने समाज में एक प्रमुख स्थान हासिल कर लिया था, मंदिरों की दीवारों में पुरोहित के प्रतिनिधि चित्र राजाओं की तुलना में अपेक्षाकृत कम सजावटी थे। पुरोहित को ग्रीको-रोमन काल से मंदिर की दीवारों में चित्रित करना शुरू कर दिया गया था और ज़्यादातर उन्हें मकबरे के स्वामियों (जिनका मकबरा था) के लिए मंदिर या अंत्येष्टि संबंधी अनुष्ठानों को निभाते हुए या एक जुलूस के हिस्से के रूप में दिखाया जाता था।

8.9 बस्तियाँ और स्थापत्य

नगरों और बस्तियों के प्रमाण विरले ही मिलते हैं। इनमें से दक्षिणी मिस्र के नगर जैसे

हिराकोंपोलिस, एबिडोस, एलेफान्तिन और इदफु महत्वपूर्ण हैं। बस्तियाँ अधिकतर छोटे प्रांतीय कस्बों की तरह होती थीं। जो एक चौड़ी दीवार से घिरी होती थीं। हर नगर में एक पवित्र स्थान होता था जो चहारदीवारी क्षेत्र के अन्दर होता था। हालाँकि, नगर दीवारों से आरक्षित नहीं होते थे और दीवारें केवल सीमान्त नगरों में ही देखी जा सकती थीं। घर काफी पास-पास निर्मित थे और जनसंख्या घनत्व उच्च था। लीबिया के रेगिस्तान के मरुद्वीपों में महत्वपूर्ण बस्तियाँ थीं जिसमें दाखला, खारगा, बाहरिया और फराफ्रा शामिल हैं। ये बस्तियाँ नील घाटी से जुड़ी थीं। दाखला की खुदाई में दीवार, मिट्टी के बर्तन, भट्टियां, मिट्टी की ईंटों की संरचनाएं और कब्रगाहों के साक्ष्य मिले हैं। मिस्र के पश्चिमी सीमांत क्षेत्र की सुरक्षा के लिए मरुद्वीपों और बस्तियों का नियंत्रण काफी महत्वपूर्ण था। रेगिस्तानों की मानव शक्ति और संसाधनों में मिस्र के प्रशासन के हित निहित थे। यह क्षेत्र डायोराइट, जंबुमणि (amethyst), तांबे और सोने के खनिज संसाधनों में समृद्ध थे। नूबिया एक महत्वपूर्ण बस्ती थी और आबनूस, पैंथर की खालें, हाथीदांत और अच्छे तेल उपलब्ध कराती थी। बुहेन की बस्ती तांबे का स्रोत थी।

मृतकों की सेवा में मिस्र के विश्वास ने, जिसमें उचित अंतिम संस्कार और प्रावधान के लिए दान शामिल हैं, उनके आर्थिक जीवन, प्रशासन और कानून पर काफी प्रभाव डाला। द्वितीय राजवंश के शिल्पकारों ने एबिडोस और हिराकोंपोलिस में मकबरे के निर्माण में पत्थरों का व्यापक उपयोग किया था, प्रथम में चूना, पत्थर और दूसरे के निर्माण में लाल पत्थर का इस्तेमाल किया गया था। पिरामिडों के रूप में महान् शाही मकबरे मिस्री स्थापत्य-कला का सबसे प्रसिद्ध रूप हैं। जोसर के सक्कारा का सीढ़ीदार-पिरामिड पहला पिरामिड था। नेत्जेरिखेत जोसेर को अपने शासनकाल के दौरान, कई वास्तुशिल्पीय मानकों की स्थापना करने के लिए जाना जाता है। उन्होंने निर्माण कार्यों में पत्थर के उपयोग का विस्तार किया और कब्रों को अक्सर पत्थर और लकड़ी के तख्तों से सजाया जाने लगा (मैनुअलियन और स्नाइडर, 2015: 5-6)।

चित्र 8.7 : सक्कारा में जोसर का सीढ़ीदार-पिरामिड
साभार: चार्ल्सजेशार्प, 2007
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/2/2e/Saqqara_pyramid_ver_2.jpg

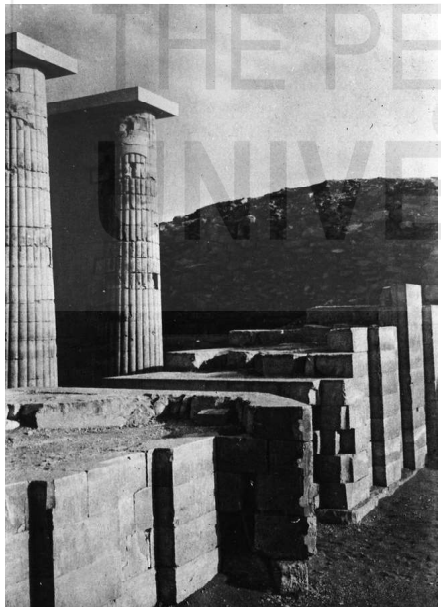

चित्र 8.8 : सक्कारा के पिरामिड का प्रवेश हॉल
साभार: विलियम हेनरी गुडइयर, जोसेफ हॉक्स और जॉन मैक्केनी, 2014
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/8f/S10.08_Entry_hall_Step_Pyramid_Complex%2C_Saqqara._image_9497.jpg

महल से संलग्न विशाल भीतरी इलाकों में मकबरों के प्रांगण थे जहाँ पत्थरों पर मिस्र के कुछ सबसे महत्वपूर्ण मृत्यु संबंधी शाही अनुष्ठानों और समारोहों के स्मारक बने थे। चौथे राजवंश

का शानदार पिरामिड अभी भी दुनिया के आश्चर्यों में से एक है। चेओप्स, चेफ्रेन और माइसेरिनस के पिरामिड आज भी स्थापत्यकला के प्रतीक माने जाते हैं। इस काल में कभी-कभी रानियों को भी अपेक्षाकृत छोटे मकबरों में दफ़न किया जाता था। पिरामिड का नक्शा प्रायः पुरानी व्यवस्था की राजनितिक संरचना का चित्र प्रस्तुत करता है। चौथे राजवंश के पिरामिड का नक्शा इस प्रकार का था जैसे कि घर गलियों की ओर खुलते थे। ऐसा तर्क दिया जाता है कि मकबरे की विशालता और राजा के मकबरे से नजदीकी मकबरा और उस मकबरे में दफन किए गए व्यक्ति के राजनीतिक पदानुक्रम को प्रदर्शित करते हैं। इन मकबरों के साथ एक नाव भी संलग्न की गई थी ताकि राजा अपने मरणोत्तर जीवन की यात्रा जारी रख सके।

स्नेफेरू (चौथे राजवंश का संस्थापक राजा) निर्माण कार्यों के विस्तार पर पैसे खर्च करने को तैयार नहीं था। अतः निर्माण कार्यों के लिए सरकारी संरक्षण नियमित और मानकीकृत किया गया। प्रांतों पर अपनी सत्ता कायम करने के लिए, उन्होंने पूरे देश में पिरामिड स्थापित किए। ये पिरामिड हिराकोपोलिस, नाकाड, एबीडोस, जावीयत एल-मेतिन, सेला और अबू रावास के महत्वपूर्ण राजनीतिक और आर्थिक केंद्रों में शाही उपस्थिति के प्रतीक थे। जो लोग शाही कार्यों में लगे थे, जैसे पिरामिड का मुख्य निर्माता और उसका परिवार और नौकर-चाकर और वे लोग जो सीधे राजा की सेवा करते थे, उनकी कब्रें भी शाही क़ब्रों के पास बनायी जाती थीं। शाही मकबरों का विकास और विस्तार शाही अंत्येष्टि मंदिरों की मानकीकृत मान्यताओं के आधार पर किया जाता था, जहाँ राजा मिस्र के परम्परागत दुश्मनों से लड़ता हुआ दर्शाया जाता था। शाही मकबरे व्यक्तिगत, ऐतिहासिक और सैनिक तथ्यों को नहीं दर्शाते। तथापि कुलीनों और गवर्नरों के मकबरे कृषि, बाज़ार, पशुपालन, मदिरा उत्पादन और घरेलू गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं।

थेब्स मिस्र की धार्मिक राजधानी थी। शानदार शाही कब्रगाह शैलकर्तित (rock-cut; चट्टानों को काटकर बनाये गये) मकबरों से बनी होती थी और 500 सालों तक यह शाही कब्रगाह के रूप में इस्तेमाल हुआ। मकबरों में प्राचीन फिरौन और रानियों की ममियां होती थीं। 1922 में, इसी क्षेत्र से तुतेनखामून के मकबरे की खोज की गई। मृत शरीरों का ममीकरण अंत्येष्टि अनुष्ठानों में शामिल था। सूत्रों के मुताबिक, उन्नीसवें राजवंश के राजा सेती प्रथम के शव के संलेपन (embalming) में 70 दिनों का समय लगा। प्राकृतिक रूप से उपलब्ध *नाट्रन* नामक नमक का इस्तेमाल मृत शरीर को शुष्क करने के लिए किया जाता था। फेफड़ों, आंतों, यकृत और पेट जैसे महत्वपूर्ण अंगों को शरीर से हटा कर कैनोपिक जार नामक पात्र में अलग से संग्रहित किया जाता था, जिसे समृद्ध रूप से अलंकृत और भव्य पवित्र स्थान में स्थापित किया जाता था जो चार देवियोंः आइसिस, नेफ्टिस, नीथ और सेल्किस द्वारा संरक्षित होते थे। राजा के शरीर को धोकर राल (resin) तथा लिनन की पोटलियों से भरा जाता था और लिनन की पट्टियों और सुरक्षात्मक ताबीज़ में लपेट दिया जाता था। चौथे राजवंश के बाद पिरामिडों की संख्या और भव्यता तेज़ी से कम होती गयी। इसका सही कारण ज्ञात नहीं है, लेकिन अन्य विविध क्षेत्रों में संसाधनों का इस्तेमाल इसका एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है। पांचवें राजवंश से पिरामिडों की दीवारों पर खुदे 'पिरामिड लेखन' से समकालीन मिस्री समाज और राजनीति की कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल होती हैं।

8.10 मिस्र का पतन

इतिहासकारों और पुरातत्त्वविदों का मानना है कि मिस्र के पतन में कई शताब्दियां लगीं। फसल की असफलताओं, विनाशकारी बाढ़, भूकंप, उपद्रवियों द्वारा फसलों का विनाश, व्यापार मार्गों में व्यवधान और दुश्मन के हमलों, सभी ने मिस्र के पतन में योगदान दिया (कुहर्त, 1995ः 386)।

राजा रामेसेस द्वितीय के 67 वर्षों (1279-1213 बी सी ई) के लंबे शासन काल में एक तरफ शांति और समृद्धि रही और दूसरी तरफ धन दौलत की निकासी और आक्रमण। उसने विदेशी व्यापार को मज़बूत किया और भव्य निर्माण परियोजनाएं शुरू कीं। ये परियोजनाएं शाही राजकोष पर बोझ साबित हुईं। इस दौरान समुद्री आक्रमण भी हुए, जिससे देश को काफी नुकसान झेलना पड़ा। इन आक्रमणों ने केंद्रीकृत सरकार को खंडित और कमज़ोर कर दिया। रामेसेस द्वितीय के शासनकाल के बाद कमज़ोर शासकों की एक श्रृंखला ने अर्थव्यवस्था और व्यापार को धीरे-धीरे चौपट कर दिया। इससे पुजारी और स्थानीय गवर्नरों के शक्तिशाली गुटों का जन्म हुआ। उदाहरण के लिए, दक्षिणी मिस्र की सरकार अमन के थेबान पुजारियों और स्थानीय राजवंशों के पुजारियों के नियंत्रण में आ गयी थी। इससे 'पुजारी राजवंश' के युग की उत्पत्ति हुई जो वैवाहिक गठजोड़ों द्वारा और भी मजबूत होता गया।

केंद्रीय सत्ता की कमजोरियों ने मिस्र की अर्थव्यवस्था पर काफ़ी बुरा प्रभाव डाला। व्यापार और वाणिज्य अक्सर बाधित हो जाते थे, राजस्व प्रणाली को संकट का सामना करना पड़ा, और आर्थिक ढांचे विघटित हो गए। थेब्स में, राज्य के कर्मचारियों को संसाधनों की आपूर्ति न होने की वजह से, कई हड़तालें हुईं और कई मकबरे लूटने की शर्मनाक घटनाऐं हुईं (पेम्बर्टन, 2013: 186)। अर्थव्यवस्था और राजनीति के विघटन से मंदिरो के साथ-साथ सामाजिक ढांचे भी चरमराने लगे। अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई। सामाजिक व्याकुलता बढ़ रही थी। सीमाओं की रक्षा नहीं की गई, और लूट-मार और हमलों की घटनाएँ बढ़ती गईं। मिस्र की बस्तियों, विशेष रूप से सीमावर्ती इलाकों, को लूटने के लिए अक्सर लीबियावासियों को दोषी ठहराया जाता था। रामेसेस राजवंश के अंत तक, देर-एल-मदीना के गांव के निवासियों को अपने गांव को त्यागने और मेदिनेट हबू (नील नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित) के मंदिरों में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा।

आंतरिक अशांति और अस्थिरता के साथ-साथ लगातार विदेशी हमले हुए, जो अंततः मिस्र की सभ्यता के पतन का कारण बना। समुद्री आक्रमणों के बाद पश्चिम से लीबिया के पड़ोसी इलाकों और दक्षिण से नूबिया के हमले हुए। 950-730 बी सी ई तक मिस्र के शासक लीबिया वंश के थे। लिबियाई और न्यूबियन प्रभाव के तहत, मिस्र उस वक्त की राजनीतिक-आर्थिक चुनौतियों को झेलने में सक्षम था। मेसोपोटामिया के समावेशी मॉडल को अपनाया गया। विजेताओं ने विजित क्षेत्रों को नहीं लूटा। इसके बजाए, उन्होंने उन क्षेत्रों पर कुशलतापूर्वक शासन किया और उनकी समृद्धि की दिशा में काम किया। 7वीं शताब्दी में, मिस्र के एक फिरौन के तहत मिस्र फिर से एकजुट होने की कोशिश करने लगा। हालांकि, इन प्रयासों को एक सीमा तक ही सफलता मिली। 671-663 बी सी ई के दौरान असीरियनों के लगातार हुए हमलों ने मिस्र को नष्ट कर दिया। मिस्री सभ्यता को अंतिम झटका 332 बी सी ई में मेसिडोनिया के अलेक्जेंडर के आक्रमण ने दिया, जिसने मिस्र के विनाश का मार्ग प्रशस्त किया।

बोध प्रश्न-2

1) मिस्र के राज्य प्रशासन और समाज पर धर्म के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) मिस्र की आर्थिक संरचना पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मिस्र की सभ्यता के पतन के क्या कारण थे ?

.....

.....

.....

.....

.....

8.11 सारांश

मेनेस के तहत मिस्र के एकीकरण ने एक महान् सभ्यता को जन्म दिया। धर्म शासन-कला, प्रशासन, राजनीति और समाज का आधार था। राजशाही देवत्व की अवधारणा में सन्निहित थी। राजा या फिरौन दैवीय मंजूरी के दावों के साथ सत्ता के प्रतीक थे। प्रारंभिक राजवंशों के दौरान लगभग सभी कार्यकारी कार्यालयों पर शाही परिवारों का कब्ज़ा था। हालांकि, नौकरशाही के अधिक जटिल होने के साथ-साथ आम लोगों को भी सरकारी कार्यालयों में शामिल किया गया। मिस्र की बस्तियों का आकार और घनत्व समय के साथ बढ़ता गया, बाद की बस्तियों में लीबियाई और न्यूबियन प्रभावों को देखा जा सकता है। मिस्र के लोगों के जीवन में धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा। कमज़ोर शासकों और निरंतर विदेशी हमलों की वजह से मिस्र की महान् सभ्यता का पतन होने लगा। अलेक्जेंडर का आक्रमण ताबूत में अंतिम कील साबित हुआ। सभ्यता का अंत हो गया लेकिन मिस्री सभ्यता की विरासत आज भी जीवित है।

8.12 शब्दावली

डब्न/डेबेन **(*Dbn/Deben*)** : तांबे के सिक्के

एम्मर गेहूं : गेहूं की एक किस्म जिसमें बालनुमा अन्न-धारक छोर और प्रत्येक बाली के अन्दर अन्न के दो दाने होते हैं। गेहूं प्राचीन मिस्र के लोगों के लिए एक दैनिक खाद्य था।

मात : न्याय और व्यवस्था की मिस्री अवधारणा

नोमार्च : स्थानीय गवर्नर

नोम्स : प्रशासनिक इकाइयां

पपायरस : प्राचीन मिस्र में पानी के एक पौधे के तने से तैयार

पदार्थ जिसका इस्तेमाल लेखन के लिए कागज के रूप में किया जाता था ।

फिरौन (Pharaoh) : मिस्री राजा का ख़िताब

प्र ह्ड/प्रवी ह्ड (Pr hd/Prwy hd) : कोषागार

स्न्वत/स्नवती (Snwt/Snwty) : अन्नागार

8.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 8.3 देखें

2) उप-भाग 8.5.1 देखें

3) उप-भाग 8.5.2 देखें

4) उप-भाग 8.5.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) भाग 8.6, और भाग 8.8 देखें

2) भाग 8.7 देखें

3) मिस्र के पतन के लिए भाग 8.10 देखें

8.14 संदर्भ ग्रंथ

कर्टिन, पी. डी. 1984. *क्रॉस-कल्चरल ट्रेड इन वर्ल्ड हिस्ट्री.* मेलबोर्नः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

फ्रैंकफोर्ट, हेनरी. 1978. *किंगशिप एंड गॉडः अ स्टडी ऑफ़ एन्सियेंट नियर ईस्टर्न रिलिजन ऐज द इंटीग्रेशन ऑफ़ सोसाइटी एंड नेचर.* शिकागोः शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस.

नीर्स, एंड्रिया एम. 2003. 'कोपिंग विथ द आर्मीः द मिलिट्री एंड द स्टेट इन द न्यू किंगडम'. जे. सी. गार्सिया (संपा.). *एंसियेंट इजिशियन एडमिनिस्ट्रेशन.* लाइडेनः ब्रिल.

जी, जे. 2015. 'डिड द ओल्ड किंगडम कोलैप्स? अ न्यू व्यू ऑफ़ द फर्स्ट इन्टर्मीडिएट पीरियड'. टी. एस. पीटर डेर मैनुअलियन (संपा.). *टुवर्ड्स अ न्यू हिस्ट्री फॉर द इजिप्शन ओल्ड किंगडम पर्सपेक्टिव ऑन पिरामिड ऐज.* लाइडेन : ब्रिल. पृ. 65.

ह्यूजेस, जे. डी. 1992. 'सस्टेनेबल एग्रीकल्चर इन एंसियेंट ईजिप्ट'. *एग्रीकल्चरल हिस्ट्री,* स्प्रिंगर. 66 (2): 17-18.

जांसेन, जे. जे. 1975. 'प्रोलेगोमेना टू द स्टडी ऑफ़ ईजिप्ट'स इकोनोमिक हिस्ट्री ड्युरिंग द न्यू किंगडम'. *स्तूदिएन जूर अल्तागिप्तास्खेन कुल्टूर.*

केनेट, डी. 2008. *फैरोओ लाइफ एंड आफ्टर लाइफ ऑफ़ ए गॉड.* न्यूयॉर्कः वॉकर एंड कंपनी.

कुहर्त, अमेलिया. 1995. *द एंसियेंट नियर ईस्ट, c. 3000-300 बी सी ई* (भाग 1). न्यूयॉर्कः रूटलेज.

मैनुअलियन, पी. डी., और टी. श्नाइडर. 2015. *टुवर्ड्स अ न्यू हिस्ट्री फॉर द इजिप्शन ओल्ड किंगडम, पर्सपेक्टिव ऑन पिरामिड ऐज.* लाइडेन : ब्रिल.

मोरेन्ज़, एस. 1960. *इजिप्शन रिलिजन,* (ए. ई. कीप, अनु.). न्यूयॉर्कः कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस.

नोअमन, एम. और डी.ई. कुओसी. 2017. 'हाइड्रोलॉजी ऑफ़ नाइल एंड एंसियेंट एग्रीकल्चर'. एस. ए. मसायोशी सातोह (संपा.). *इरिगेटेड एग्रीकल्चर इन ईजिप्टः पास्ट, प्रेजेंट एंड फ्यूचर.* स्विट्ज़रलैंडः स्प्रिंगर.

पेम्बर्टन, डेलिया. 2013. द *सिविलाइज़ेशन ऑफ़ एंसियेंट ईजिप्ट.* न्यूयॉर्कः रोसेन पब्लिशिंग.

स्मिथ, आर. एल. 2009. *प्रीमाडर्न ट्रेड इन वर्ल्ड हिस्ट्री.* लंदनः रूटलेज.

टीटर, एमिली. 2011. *रिलिजन एंड रिचुअल इन एंसियेंट ईजिप्ट.* न्यूयॉर्कः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

वार्डन, एल. ए. 2014. *पॉटरी एंड इकॉनमी इन द ओल्ड किंगडम.* लाइडेनः ब्रिल.

विल्किन्सन, टी. ए. 1999. *अर्ली डायनेस्टिक ईजिप्ट.* न्यूयॉर्कः रूटलेज.

वोलिंस्की, आरेलीन. 1987. 'इजिप्शियन मास्क्सः द प्रीस्ट एंड हिज रोल', *आर्कीआलाजी,* 40 (1): 22.

पी. डी. एफ.:

https://www.jstor.org/stable/pdf/124743.pdf?refreqid=search%3A4c533b5ef850847ddaf8a4b0c861c0dd

https://www.jstor.org/stable/pdf/40000484.pdf?refreqid=search%3A32f93b763a1c10b282ab086351828847

8.15 शैक्षिक वीडियो

एन्सिऐन्ट ईजीप्ट हिस्ट्री एंड मिस्ट्रीज़
https://www.youtube.com/watch?v=l6DdNtfBRlU

इन्जीनियरिंग ऑफ ऐन्सिएन्ट ईजिप्ट हाउ पिरामिड्स आर बिल्ट
https://www.youtube.com/watch?v=c9zN5JuubN0

द माइटी ईजिप्शियन सिविलाइज़ेशनः रूल्ड बाय रेमसेस II
https://www.youtube.com/watch?v=6lo7jaH2yGk

द लॉस्ट गॉड्स ऑफ द ईजिप्शियन्स
https://www.youtube.com/watch?v=YWzKAFveXyo

इकाई 9 चीन की शांग सभ्यता*

इकाई की रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 चीन में कांस्य युगीन सभ्यता के प्रमुख स्थल

9.4 चीन में कांस्य युगीन सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

- 9.4.1 कांस्य युगीन वस्तुएँ और कांस्य तकनीकी
- 9.4.2 दीवारों से घिरी बस्तियाँ
- 9.4.3 शवाधान
- 9.4.4 सामाजिक स्तर और वंश परंपरा
- 9.4.5 राजत्व की प्रकृति
- 9.4.6 दैवीयकरण और बलिदान
- 9.4.7 लेखन

9.5 शांग कौन थे?

- 9.5.1 पुरातात्विक साक्ष्य और लिखित रिकॉर्ड
- 9.5.2 ज़िया (Xia) का रहस्य

9.6 चीन की कांस्य युगीन दुनियाः अनेक केन्द्र और विनिमय का जाल

9.7 शांग सभ्यता की विरासत

9.8 सारांश

9.9 शब्दावली

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.11 सन्दर्भ ग्रंथ

9.12 शैक्षणिक वीडियो

9.1 उद्देश्य

आप इसके पहले की **इकाई 7** में कांस्य युगीन सभ्यता की विशेषताओं और **इकाई 8** में इसके एक प्रमुख उदाहरण मिस्र की सभ्यता के विषय में पढ़ चुके हैं। इस इकाई में हम चीन की कांस्य युगीन सभ्यता के विषय में चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- शांग सभ्यता और राज्य, साथ ही तात्कालिक एवं समकालीन चीन में पूर्वजों की संस्कृति का विवरण दे सकेंगे,
- चीन की कांस्य युगीन सभ्यता के उत्खनित प्रमुख स्थलों की सूची बना सकेंगे,
- चीन में कांस्य युगीन सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं की पहचान कर पाएंगे,
- उन नए पुरातात्विक साक्ष्यों का विश्लेषण कर सकेंगे जिन्होंने चीनी सभ्यता के उद्‌भव और विकास के विषय में हमारी अवधारणा को परिवर्तित किया, और
- चीन की सभ्यता में शांग के स्थायी योगदान की सराहना कर सकेंगे।

* डॉ. माधवी थाम्पी, ऑनरेरी फेलो, इंस्टीट्यूट ऑफ चाइनीज़ स्टडीज़, दिल्ली

9.2 प्रस्तावना

दूसरी सहस्त्राब्दि बी सी ई के मध्य से लेकर शताब्दी के अन्त तक चीन में शांग सभ्यता पहली ऐसी सभ्यता थी जिसमें एक प्रमुख सभ्यता की सभी विशेषतायें थीं। जिसमें धातु शोधन प्रक्रिया, शहरी बस्तियाँ, साथ ही ऐतिहासिक इमारतें, स्पष्ट रूप से स्तरीकृत समाज, जिसमें राजा, कुलीन वर्ग, आम नागरिक, एक राजनीतिक धार्मिक राज्य तथा पहली बार चीन में लेखन मौजूद था। यह पहली ऐसी सभ्यता थी जिसके पुरातात्विक साक्ष्य और लिखित दस्तावेज एक दूसरे से मिलते-जुलते थे। अनेकों विशेषताएँ जो सैकड़ों सालों से चीनी सभ्यता के लिए जानी जाती थीं उनका मूल विकास शांग काल में ही हुआ। जिसमें **प्रतीकात्मक (logographic) लिपि**, पितृपूजा, विशालकाय परियोजनाओं में श्रमिकों की बड़े स्तर पर लामबंदी, नौकरशाही की शुरुआत और साठ दिनों पर आधारित परम्परागत कैलेण्डर सम्मिलित हैं।

मानचित्र 9.1: शांग राज्य का विस्तार
साभार: लमास्सू डिज़ाइन, 2009
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/80/Shang_dynasty.svg

पिछले सौ वर्षों में, विशेष रूप से पिछले पचास वर्षों में चीन में पुरातात्विक खोजों के प्रभावशाली परिणामों ने चीनी सभ्यता और मुख्य रूप से शांग सभ्यता की अवधारणा को परिवर्तित कर दिया। सम्पूर्ण चीन में प्राचीर युक्त (दीवारों से घिरी हुई) बस्तियाँ और हजारों शवाधान स्थलों की खुदाई इस बात का प्रमाण देती है कि अनेक कांस्य युगीन सभ्यताएं चीन के विस्तृत क्षेत्र में एक साथ अस्तित्व में रहीं और उन्होंने परस्पर एक दूसरे को प्रभावित किया। इन सर्वेक्षणों ने कांसे के इस युग के सबसे बड़े विश्व संग्रह का पता लगाया। साथ ही इससे यह स्पष्ट होता है कि चीन में उस समय में कांसे की ढलाई की प्रचलित तकनीक उस काल के लिए अद्वितीय थी। वास्तव में यह आधुनिक पुरात्वविज्ञान की एक अत्यधिक रोमांचक कहानी है।

9.3 चीन में कांस्य युगीन सभ्यता के प्रमुख स्थल

प्रारम्भिक तृतीय सहस्त्राब्दि बी सी ई में सर्वप्रथम कांसे की वस्तुओं का पता चीन के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र से मिलता है। हालांकि, प्रारम्भिक एवं महत्वपूर्ण कांसे की वस्तुओं और कांस्य की ढलाई के साक्ष्य उत्तरी चीन के हेनान प्रांत में **एर्लितोउ (Erlitou)** क्षेत्र में पाये गये थे। यह सर्वप्रथम 1959-1978 में और फिर 1999 में खोजी गई। एर्लितोउ संस्कृति 1900-1500 बी. सी. ई. के बीच फली-फूली। कुटी हुई मिट्टी से बनी हुई दीवारों से घिरी बस्तियाँ, घरों तथा शवाधानों के साक्ष्य इस स्थल से प्राप्त होते हैं। कांसे की वस्तुओं में मुख्य रूप से हथियार और बर्तन साथ ही यहां से कांस्य ढलाई के प्राचीनतम अवशेष मिलते हैं। प्रारम्भ में आनुष्ठानिक कार्यों के लिए कांसे की वस्तुओं का सर्वाधिक प्राचीन संग्रह भी इस क्षेत्र से मिलता हैं। एर्लितोउ संस्कृति को चीन के कांस्य युग के उदय का ऊषा-काल माना जा सकता है।

मानचित्र 9.2: उत्तरी चीन में एर्लितोउ संस्कृति का क्षेत्र (1900-1500 बी सी ई)
साभार: कांगूओले, 2015

स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/9/96/Erlitou_map.svg

मनचित्र 9.3 : एर्लितोउ स्थल का मानचित्र
गीडिऑन शेलाच एवं यित्जाक जाफे, (2014) 'द अर्लीएस्ट स्टेट्स इन चाइनाः ए लाँग टर्म ट्रेजेक्टरी एप्रोच', *जर्नल ऑफ आर्किआलजिकल रिसर्च, 22* (4) (चित्र 3) से उद्धृत

एर्लितोउ क्षेत्र से लगभग 85 कि. मी. दूर **एर्लिगांग (Erligang)** संस्कृति (1600-1300 बी सी ई) के अवशेष पाये गये। एर्लिगांग संस्कृति में हमें कहीं अधिक व्यापक और परिष्कृत कांसे ढलाई के कारखाने के साक्ष्य मिलते हैं। कांसे की वस्तुओं के विशाल संग्रह के अलावा यहां ढलाई की कार्यशालाओं के अवशेष भी मिलते हैं। एर्लिगांग सम्भवतः शहरी बस्ती का एक विशाल क्षेत्र है। इसकी पुष्टि यहां से प्राप्त दीवार द्वारा की जाती है जिसका परिधीय क्षेत्र लगभग 7 किलोमीटर था, और जो आधार पर 20 मीटर चौड़ी थी और इसकी ऊँचाई 8 मीटर थी। इन दीवारों, महलों और कांस्य ढलाई की कार्यशालाओं के सबूत एक ऐसे समाज और राजनीतिक संरचना की ओर संकेत करते हैं जो बड़े पैमाने पर श्रमिकों की लामबंदी और नियोजन में सक्षम था।

लेकिन चीन में कांस्य युगीन सभ्यता का सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थल **अन्यांग (Anyang)** के निकट है, जो उत्तरी चीन के हेनान राज्य का भी एक भाग है। **'ऑरेकल हड्डियों' (Oracle bones**; ऑरेकल हड्डियों पर विस्तृत जानकारी के लिए देखें **उप-भाग 9.4.6**) पर पाए जाने वाले चीनी लेखन के प्रारम्भिक उदाहरणों के स्रोतों का पता लगाने के प्रयास के रूप में यहां 1928 में खुदाई शुरू हुई थी। अन्यांग के निकट की खुदाई शांग राजवंश (लगभग 1600-1046 बी सी ई) के राजाओं के प्राचीन राजधानी क्षेत्र को दर्शाती हैं, और इस राजवंश के अस्तित्व को भी निश्चित करती है जिसे इसे पहले सिर्फ कुछ बाद के ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर जाना जाता था। यह 30 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है जिसमें ऐतिहासिक महल-मन्दिर परिसर, विशाल शवाधान स्थल और कांस्य ढलाई कार्यशालाओं के अवशेष सम्मिलित थे। यह प्रारम्भिक एर्लिगांग संस्कृति से काफी मिलती जुलती है। लेकिन अन्यांग स्थल में मुख्य अन्तर यह है कि यहाँ सर्वाधिक पुराने चीनी लेखन का सबूत मुख्य रूप से हजारों ऑरेकल हड्डियों के साथ-साथ अनेक अनुष्ठान में प्रयोग में की जाने वाली कांस्य वस्तुओं पर भी मिला है। यह लेखन हमें निश्चित रूप से यह पहचानने में मदद करता है कि यह स्थल शांग राजाओं द्वारा शासित था।

इन प्रमुख क्षेत्रों के अतिरिक्त, जो उत्तरी चीन की पीली नदी और उसकी सहायक नदी क्षेत्र में फैला हुआ है, पिछले कुछ दशकों की खुदाई लगातार नये और महत्वपूर्ण क्षेत्रों के अस्तित्व को प्रकट कर रही है। इन स्थलों की प्राचीनता एर्लिताउ, एर्लिगांग और अन्यांग के समकक्ष या अधिक है। ये अन्य स्थल उत्तर और उत्तर पश्चिमी चीन के विभिन्न हिस्सों में स्थित हैं, साथ ही मध्य चीन में दक्षिण तक यांगज़ी नदी क्षेत्र तक स्थित हैं।

9.4 चीन में कांस्य युगीन सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

पुरातात्विक खुदाई द्वारा बड़ी संख्या में कलात्मक वस्तुएँ तथा बस्तियों का खाका प्राप्त होता है। यह चीन में कांस्य युगीन सभ्यता की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संरचना और प्रणालियों के पुनर्निर्माण में सहायता करती है। यहां पर हम इस सभ्यता के कुछ मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे।

9.4.1 कांस्य युगीन वस्तुएँ और कांस्य प्रौद्योगिकी

कांस्य वस्तुओं का सबसे विशाल संग्रह चीन में ही पाया जाता है। कभी-कभी विद्वान एवं इतिहासकार चीन में कांस्य युगीन सभ्यता के अन्त की तिथि की पुष्टि करने में असफल हो जाते हैं क्योंकि वहां लोहे का प्रयोग प्रारम्भ होने के बाद भी लगातार धार्मिक अनुष्ठानों और अन्य कार्यों के लिए बड़ी संख्या में कांसे की वस्तुएँ प्रयोग में लायी जा रही थीं।

इस दौरान चीन में कांसे की जो भी वस्तुएँ बन रही थीं उनमें बर्तन और हथियार प्रमुख थे। चीन में 1200 बी सी ई के लगभग घोड़ागाड़ी की शुरुआत के बाद से गाड़ियों के लिए कांसे के पुर्जे भी बनाये जाने लगे। अधिकतर प्राप्त कांसे के बर्तन शराब के प्रयोग से सम्बन्धित थे जिनमें गर्म करने या शराब पकाने के बर्तन और शराब पीने वाले कप थे। कांस्य का दूसरा जो प्रमुख बर्तन मिला वह *डिंग* या तीन पैर वाला भोजन पकाने का बर्तन था। ये सारे बर्तन प्रायः अनुष्ठान और समारोहों में प्रयोग किये जाते थे जिसका अंदाज़ा इनके विशाल आकार से भी लगता है। सबसे बड़े ऐसे बर्तन का भार एक टन से अधिक था!

चीन के बर्तनों की दूसरी प्रमुख विशेषता यह है कि इसके बाहरी आवरण पर पेचीदा नक्काशी बनी होती है। यह उनके उपयोगी कार्यो के अतिरिक्त उन्हें एक सौंदर्यपरक आकर्षण प्रदान करती है। हाल ही में मध्य चीन से खुदाई में प्राप्त प्रमुख वस्तुएँ उत्तरी चीन के कांसे की वस्तुओं से भिन्न हैं, जो एक अलग प्रकार की संस्कृति को प्रस्तुत करती हैं। इसमें यांगज़ी नदी के निचले क्षेत्र से प्राप्त आनुष्ठानिक घंटिया शामिल हैं। यद्यपि सर्वाधिक उल्लेखनीय कांस्य वस्तुएँ दक्षिणी पश्चिमी चीन के सांजिंगडुई (Sanxingdui) में मिलती है। इसमें कांसे का मुखौटा, मानव और जानवरों की आकृतियां, यहां तक कि दुनिया की सबसे पुरानी मनुष्य की आदमकद कांस्य आकृति शामिल हैं।

विभिन्न प्रकार के कांसे की वस्तुओं के अतिरिक्त, वे सभी उत्पादन की एक ही तकनीक, **कांसे की ढलाई, (bronze casting)**, जिसके लिए चीनी मिट्टी के ढाँचे का प्रयोग किया जाता था, अपनाते थे। इस विधि में सर्वप्रथम मिट्टी से वस्तु विशेष का नमूना (model) बनाया जाता था। तत्पश्चात् इसे आग में तपाया जाता था, उसके पश्चात् मूल मॉडल पर एक और परत चढ़ाई जाती थी, फिर इस परत को अनेक भागों में काटकर हटा दिया जाता था। मिट्टी के दोनों मॉडलों के साथ की पतली परत को खुरचा जाता था ताकि जब बाहरी परत को जोड़ा जाता तो दोनों के बीच अन्तर छूट जाए। तत्पश्चात् पिघली हुई धातु (तांबा-टिन-सीसा मिश्रित) को उस रिक्त स्थान में डाला जाता था। इसके ठण्डा होने के बाद बाहरी आवरण को परत दर परत हटा देते थे तब कांसे की वस्तु दिखायी देने लगती थी। फिर इन पर पॉलिश की जाती थी। एक बहुत ही रोचकपूर्ण तथ्य यह था कि बाहरी आवरण पर जो नक्काशी बनाई जाती थी वह कांसे के ठण्डा होने के बाद नहीं, बल्कि यह मिट्टी के सांचे के अन्दर ही बनी होती थी ताकि उसे भी वस्तुओं के साथ ढाला जा सके।

चित्र 9.1 : सांजिगडुई स्थल से प्राप्त सोने के पर्ण वाला कांस्य का मुखौटा
साभारः मोमो, 2011
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c2/Gold_Mask_%28ÄžÑ'b—in%29.jpg

चित्र 9.2 : शांग वंश का कांस्य का मदिरा परिरक्षण पात्र
साभारः इसमून, 2011
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/2/2c/La_Tigresse%2C_bronze_vessel_to_preserve_drink._Hunan%2C_11th_BC._Cernuschi_museum.jpg

चीन में कांसे को ढालने की जो विधि प्रचलन में थी, वह अन्य जगहों में प्रयुक्त हथौड़ा मारकर (hammering) आकृति बनाने की विधि, जैसा कि प्राचीन एथेन्स में था, से कहीं अधिक जटिल और परिष्कृत थी। पुरातत्ववेत्ता और इतिहासकार रॉबर्ट बेगले के अनुसार यह विधि धातु अयस्क की बहुलता और श्रमिकों की उपस्थिति को दर्शाती है (बेगले 1999: 141)। इस विधि से बड़े स्तर पर कुशल श्रम विभाजन तथा कांस्य का उत्पादन किया जा सकता था। चूंकि ताँबे का अयस्क मध्य चीन से निकाला जाता था, अतः परिवहन के लिए इसे सुदूर उत्तरी चीन ले जाने के लिए क्षेत्र के कई जलमार्गों का प्रयोग किया जाता था। यह तथ्य तथा यह तथ्य भी कि चीन की सभी कांस्य उत्पादक सभ्यतायें कांस्य ढलाई की एक समान तकनीक ही अपनाते थे, यह इस बात का सबूत है कि उनमें इतने पहले भी आपस में संपर्क था।

9.4.2 दीवारों से घिरी बस्तियाँ

नई पुरातात्विक खोजों ने उत्तर नवपाषाणकाल की पचास से भी अधिक प्राचीरयुक्त बस्तियों का पता लगाया है जो चीन के व्यापक क्षेत्र में फैली हुई थीं। एर्लितोउ संस्कृति के काल में, ये प्राचीरयुक्त बस्तियाँ मुख्य रूप से उत्तरी एवम् उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र तक सीमित थीं। सबसे बड़ी बस्ती लगभग 100,000 वर्गमीटर में फैली हुई थी और उसमें सम्भवतः 600 मकान मौजूद थे। उत्तर एर्लिगांग संस्कृति के समय तक आते-आते, इन बस्तियों में महल, मन्दिर, विशाल कब्रिस्तान, गोदाम, अनाज घर और साथ ही कार्यशालाएँ भी मौजूद थीं।

इन बस्तियों की एक विशेषता यह है कि दीवारों और मुख्य इमारतों की नींव कुटी हुई मिट्टी से बनी थी। इसके लिए सर्वप्रथम बांस का एक ढाँचा बनाया जाता था जिसमें गीली मिट्टी को परतों में डाला जाता था। जब गीली मिट्टी की इस परत को पीट-पीट कर कठोर कर देते थे तो इस पर दूसरी परत डालने से पहले इसे सूखने के लिए छोड़ दिया जाता था। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती थी जब तक कि दीवार अपेक्षित ऊँचाई तक न पहुँच जाए। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप दीवारें और संरचना अत्यधिक मजबूत और टिकाऊ बनाती थीं। आश्चर्य की बात तो यह है कि इसी प्रक्रिया का प्रयोग कई सौ साल बाद चीन की महान् विशालकाय दीवार (Great Wall of China) को बनाने के लिए भी किया गया था।

इन विशाल प्राचीरयुक्त बस्तियों का अस्तित्व, मुख्यतः एर्लिगांग काल से, उस समय के राजनीतिक और सामाजिक संगठन की ओर संकेत है जिनके तहत् निर्माण में भारी संख्या में उनके द्वारा श्रमिकों की **लामबंदी (mobilization)** की जाती थी। यह तत्कालीन समुदायों अथवा नव उदित राज्यों की शत्रुओं के आक्रमण से बचाने के लिए स्वयं को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता को दर्शाता है।

9.4.3 शवाधान

चीन की कांस्य युगीन सभ्यता के प्रमुख साक्ष्य हज़ारों शवाधान स्थलों से मिलते हैं। उस समय के चीन के निवासी न सिर्फ मृतक को दफनाते थे बल्कि उनके साथ उनकी जरूरत की कुछ वस्तुएं भी कब्र में उनके साथ रख देते थे। वे मानते थे कि मरने के बाद भी मृतक को इन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी। मृतक व्यक्ति जितना अधिक धनी अथवा प्रतिष्ठित था, उसकी कब्र से उतनी ही अधिक वस्तुएँ प्राप्त हुईं। इससे हमें उस समय के लोगों की भौतिक संस्कृति, उनके सामाजिक संगठन, राजनीतिक संरचना और यहां तक कि उनकी आस्था और धार्मिक विश्वासों के बारे में भी जानकारी मिलती है।

नदी के पार, अन्यांग के पुरातात्विक स्थल के महल परिसर से एक शाही कब्रिस्तान के अवशेष मिलते हैं। यहाँ शांग राजाओं के आठ मकबरे तथा एक अपूर्ण मकबरा पाया गया है। ये जटिल संरचना के साथ, **गहरे शाफ्ट शवाधान गड्ढे** थे, जिसके लिए अत्यधिक संसाधन और कुशल कारीगरों की आवश्यकता पड़ी होगी, यह कब्रें मिस्र के राजाओं (फिरौन; मिस्र के

राजनीतिक तथा धार्मिक नेता की उपाधि, जिसे आपने **इकाई 8** में पढ़ा होगा) की कब्रों से बहुत अलग नहीं थीं। यद्यपि कई सौ सालों में, थोड़ा बहुत छोड़कर, सारी कब्रें लुटेरों द्वारा लूट ली गई थीं फिर भी अन्यांग की एक शाही कब्र इन डाकूओं से अछूता रह गई। यह कब्र लेडी हाओ (Lady Hao) की थी जो शांग राजा वू डिंग (Wu Ding) (1250-1192 बी सी ई) की पत्नी थी। यह कब्र हालांकि शांग राजाओं की कब्रों से छोटी थी फिर भी आधुनिक चीनी पुरातत्व की आश्चर्यजनक खोज है। कांसे की अनेक तरह की वस्तुओं के अलावा उनकी कब्र से बहुत सी वस्तुएँ प्राप्त हुईं जिनमें हरे रंग के कीमती पत्थरों (jade), हड्डियों, हाथी दांतों से बनी वस्तुएँ, मिट्टी के बर्तन तथा पत्थर शामिल थे। इसके अतिरिक्त हजारों कौड़ी शैल (cowry shells) भी मिले। इन वस्तुओं में कुछ लेडी हाओ द्वारा अपने जीवन काल में एकत्रित किये गये थे और कुछ वह अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करती थीं जबकि कुछ अन्य सांकेतिक वस्तुएँ उनकी मृत्यु के बाद उनका साथ देने के लिए रखी गयी थीं। उनकी कब्र में 6 कुत्ते और 16 मनुष्यों के कंकाल भी पाये गये। कांसे की कलात्मक शिल्पकृतियों पर उत्कीर्ण अभिलेखों द्वारा पुरातत्ववेत्ताओं ने आसानी से इस बात का पता लगा लिया कि ये कब्र लेडी हाओ से सम्बन्ध रखती थी। दुर्भाग्यपूर्ण, लेडी हाओ न तो कोई सामान्य महिला थी और न ही केवल शाही सहचारी थी। यहां इस बात का पर्याप्त साक्ष्य मिलता है कि वह एक सैन्य जनरल थी जो युद्धों में फौज की अगुआई किया करती थी।

चित्र 9.3 : लेडी फू हाओ की कब्र, यिंगजू, हेनान, चीन
साभार : क्रिस गीफोर्ड, 2007
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/f/f2/Tomb_Fu_Hao_YinXu.jpg

इन शाही कब्रों के अतिरिक्त, कम से कम तीन हजार से भी अधिक शवाधान स्थल शांग शासनकाल के समय के पाये गये हैं, यद्यपि उनमें से सिर्फ कुछ की ही खुदाई की गयी। कब्रों में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और उनकी मात्रा विभिन्न सामाजिक स्तरों की विद्यमानता को दर्शाती है। इन कब्रों से हमें इस बात का पता लगता है कि उस समय के लोगों का अपने पूर्वजों के प्रति लगाव और सम्मान था। उनका विश्वास था कि मृतक को रहने के लिए उन सभी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है जिसका प्रयोग वह अपने जीवन काल में करते थे। राजाओं और कुलीन वर्गों के लिए इसका अर्थ था कि लोगों की मृत्यु के

बाद उनका साथ देने के लिए अन्य मनुष्यों की बलि देकर उन्हें उनके साथ दफन कर दिया जाता था। ये उनकी पत्नियां, घनिष्ठ अनुचर भी हो सकते थे; वे दास या कैदी भी हो सकते थे जैसा कि कब्रों से कई ऐसे कंकाल पाये गये हैं जिनमें से किसी के सिर कटे थे, अथवा किसी का अंग-भंग किया गया था। शांग के शवाधान स्थलों से जो वस्तुएँ मिलीं उनमें से कुछ पर लेखन भी किया हुआ था। ऐतिहासिक तौर से ये कब्रें चीन की कांस्य युगीन सभ्यता की जानकारी का प्रमुख स्रोत हैं।

बोध प्रश्न-1

1) चीन के प्रमुख कांस्य युगीन स्थलों की सूची बनाओ साथ ही यह भी बताओ कि यह किस अवधि में विकसित हुई?

.....

.....

.....

.....

.....

2) शांग सभ्यता में कांस्य की वस्तुओं को बनाने के लिए किस तकनीक का प्रयोग किया जाता था?

.....

.....

.....

.....

.....

3) शांग काल के शवाधानों की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

9.4.4 सामाजिक स्तर और वंश परम्परा

जैसा कि उपर्युक्त शवाधान स्थलों पर चर्चा से हमें स्पष्ट होता है कि शांग समाज अत्यधिक स्तरीकृत था। महलों व अन्य निवास स्थलों की भिन्नता इस बात का सबूत देती है कि वहां पर स्पष्टतः वर्ग विभाजन था। वहां एक अभिजात्य वर्ग था जिनमें शाही परिवार और कुछ कुलीन वर्ग थे। उनमें से कुछ कुलीन परिवार शांग की राजधानी में रहते थे, जबकि अन्य, दूसरी छोटी-छोटी बस्तियों में फैले हुए थे। इस समाज का अपना अलग व्यवसायिक समूह था जिसमें कांसे की ढलाई करने वाले, कुम्हार, कसाई और गड़ेरिये इत्यादि थे। वहां एक अन्य वर्ग सामान्य जन का भी था जिन्हें कुछ अभिलेखों में 'असंख्य' (the multitude) कहकर

संबोधित किया गया है। विद्वानों में इस विषय पर बहुत अधिक चर्चा हुई लेकिन सामान्य व्यक्ति का दर्जा (status) क्या था इस पर अधिक सहमति नहीं बन पायी – क्या वे गुलाम थे या एक तरीके के कृषि दास थे या सिर्फ किसान, यह उन अभिलेखों से स्पष्ट नहीं होता। स्पष्टतः वे शांग राजाओं की विशाल दीवारों, भवनों तथा कब्रों को बनाने के लिए ज़रूरी अधिक संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता को पूरा करते थे, उनमें सम्भवतः कुछ अन्य जगहों से लाए गए कैदी भी शामिल थे।

चित्र 9.4 : 'बहुसंख्यक' शब्द का द्योतक चीनी भाषा का चिन्हन
स्रोत : http://www.iub.edu/~g380/3.8-Society-2010.pdf

ऑरेकल बोन्स पर पाये जाने वाले ऊपर दिए गए चिह्न या चीनी लेखन से the multitude को पहचान दी जाती थी (**चित्र 9.4**)। विद्वानों द्वारा इस चिह्न को एक किसान के साथ उसके निरीक्षक अथवा केवल खेत में काम करने के रूप में पढ़ा गया है। आधुनिक चीनी भाषा में *ली-मिन* शब्द को 'आम जनता' और 'मल्टीट्यूड' (बहुसंख्यक) के लिए इंगित किया जाता है।

स्रोत : http://www.iub.edu/~g380/3.8society-2010.pdf. (इंडियाना यूनीवर्सिटी की कक्षाओं में पढ़ने के लिए ऑनलाइन सामग्री) तथा **व्हेन द वर्ल्ड वाज ब्लैकः द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ द वर्ल्डस फर्स्ट सिविलाइजेशन, भाग-2, एन्सिएन्ट सिविलाइजेशन्स (*साइंस ऑफ सेल्फ* का भाग-2) (अटलांटाः सुप्रीम डिजाइन पब्लिशिंग, 2013)**

जो भी लिखित या पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं, उनसे यह पता लगता है कि वंश अथवा वंशीय परम्परा का बड़ा महत्व था। यह वंश परम्परा न सिर्फ कुलीन वर्गों के लिए आवश्यक थी बल्कि साथ ही कलात्मक और व्यवसायिक समूहों के लिए भी महत्व रखती थी। यहां पर गोत्रीय संबंधों को जोड़ने के लिए पूर्वजों की पूजा का अथवा उनके प्रति श्रद्धा का प्रचलन था। इस प्रकार पूर्वज मृत्यु के बाद भी अपने गोत्र और वंश पर प्रभाव रखते थे। शांग समाज कुछ अर्थों में वंशों के विभिन्न समूहों का एक संघ माना जा सकता है।

9.4.5 राजत्व की प्रकृति

शांग राजा पितृसत्तात्मक शासक थे। इसका अर्थ था राज्य को एक बड़ा परिवार या जुड़े हुए वंशों का समूह समझा जाता था जिसका मुखिया राजा होता था और वह प्रभुत्वशाली अथवा राजकीय वंश का होता था। उत्तराधिकार वंशानुगत था, यद्यपि यह आवश्यक नहीं था कि राजा अपने बड़े पुत्र को ही नियुक्त करे। राजा अपनी प्रजा पर पूर्ण अधिकार रखता था, यहां तक कि उनके जन्म और मृत्यु पर अधिकार की शक्ति भी उनके पास होती थी।

शांग राजा चीन के केन्द्रीय (Core) भाग पर शासन करते थे जो अधिक बड़ा नहीं था, इसमें उत्तरी चीन के कुछ भाग शामिल थे। इस मुख्य भाग के चारों ओर जो छोटे-छोटे राज्य या रिसायतें थीं वह शांग राजा के वंश या राजा के मित्रों द्वारा शासित की जाती थीं। शांग राजा इन क्षेत्रों का प्रायः नियमित विचरण किया करते थे। इसके अतिरिक्त इसके आगे कुछ और क्षेत्र भी थे जो उपद्रवियों/शत्रुओं द्वारा नियंत्रित किये जाते थे जिनके विरूद्ध शांग राजाओं के प्रायः युद्ध भी होते थे। अधिक संख्या में कब्रों में विकलांग या अस्थि भंग लोगों के जो कंकाल मिले वह शायद इन्हीं युद्धों के बंदियों के थे। शांग राजा स्थायी सेना नहीं रखते थे,

बल्कि रिश्तेदारों, छोटे कुलीनों और सहयोगियों पर निर्भर रहते थे जो आवश्यकता पड़ने पर युद्ध के समय सैनिकों की आपूर्ति करते थे।

इस अवधि के अभिलेख यह दर्शाते हैं कि शांग राजा राज्य शासन के अनेक पहलूओं जैसे युद्ध, खेती की सफलता, शहरों का निर्माण और अन्य ऐसी कई बातों को महत्व देते थे। लेकिन शांग काल में राजत्व की अद्वितीय प्रकृति यह थी कि राजा धार्मिक और राजनीतिक दोनों का प्रमुख होता था। शांग राज्य को एक प्रकार का धर्मराज्य (theocracy) समझा जा सकता है। क्योंकि राजा अपने राजशाही वंश का सर्वोच्च होता था, इसलिए सिर्फ राजा ही अपने पूर्वजों और ईश्वर से सीधे बात कर सकता था, जिसमें सर्वोच्च देवता जो **डी (Di)** कहलाता था, वो भी शामिल था। यह प्रक्रिया जिसे दैवीयकरण (divination) कहते हैं कैसे सम्पन्न होती थी इसका अध्ययन हम अगले भाग में करेंगे। उत्तर शांग काल के दौरान राजा अन्य दैवीय माध्यमों का उपयोग नहीं करते थे बल्कि स्वयं आत्माओं के साथ संवाद किया करते थे। यह विश्वास कि शांग राजा देवताओं और आत्माओं की दुनिया और समाज के मध्य संचार का एकमात्र माध्यम था इस विश्वास से शांग राजाओं के अपनी प्रजा पर अधिकार को काफी बल मिला होगा।

9.4.6 दैवीयकरण और बलिदान

आत्माओं और ईश्वर के एक बहुत बड़े समूह पर शांग लोग विश्वास रखते थे। इनमें से जो सर्वाधिक प्रमुख था उसे डी (Di) या शांग डी (Shang Di) के नाम से जाना जाता था। उनका प्रकृति के अनेक देवताओं में विश्वास था जिनमें वर्षा, तूफान, हवा, सूरज, चाँद आदि सम्मिलित थे। शांग अपने पूर्वजों की आत्माओं की भी पूजा करते थे। उनका मत था कि जो पूर्वज जितने अधिक पहले के होंगे वह उतने ही अधिक शक्तिशाली होंगे। राजाओं का अपने पूर्वजों की आत्माओं और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक सभाओं का आयोजन और उनका प्रचार एवं प्रसार करना प्रमुख कार्य था। पुरातात्विक उत्खननों में विशाल महल-मन्दिर परिसर मिले हैं जहां राजा द्वारा इन अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता होगा।

राजा न सिर्फ ईश्वर और आत्माओं की पूजा किया करते थे, बल्कि वह अपने शासन से सम्बन्धित अन्य विषयों जैसे अन्य राज्यों से सम्बन्ध, कृषि फसल की दशा, बच्चों की पैदाइश, बीमारियों, प्राकृतिक आपदाओं व अन्य विषयों पर ईश्वर और आत्माओं से प्रायः संवाद भी किया करते थे। दैवीयकरण की यह प्रक्रिया 'ऑरेकल बोन्स' द्वारा सम्पन्न की जाती थी। सर्वप्रथम राजाओं के विषयों और प्रश्नों को संक्षिप्त रूप में इस पर लिख दिया जाता था। ये प्रायः बैलो के कंधे की समतल हड्डियाँ या फिर कछुएँ के अन्दर के कवच (shells) होते थे। भविष्यवेत्ता (diviner; बाद में स्वयं शांग राजा) इन हड्डियों को तब तक गर्म करता था जब तक कि ये चटक (दरार) न जायें। हड्डियों के चटकने के तरीके के आधार पर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर की व्याख्या या भविष्यवाणी की जाती थी। प्रश्नों/मामलों से सम्बन्धित वास्तविक परिणाम या उत्तर जो भी समझा जाता था उसको भी इन हड्डियों पर लिख दिया जाता था।

ऑरेकल हड्डियों पर मिली लिखावट का पता सर्वप्रथम 1899 में एक प्राचीन सभ्यता से मिला। उस समय से लेकर अब तक 2 लाख से भी अधिक ऑरेकल हड्डियों के टुकड़े पाये गये हैं। इससे इतिहासकार और पुरातत्ववेत्ताओं को शांग दुनिया की एक बड़ी तस्वीर दिखाई दी जिसका उस समय तक कोई मुख्य साक्ष्य नहीं मिला था। राजाओं और सम्मानित व्यक्तियों के नामों की जानकारी इन हड्डियों से मिली और बाद के ऐतिहासिक तथ्यों से उनकी पुष्टि भी हुई। यद्यपि इन हड्डियों पर लिखावट पूर्णरूप से राजाओं और उनके कार्यों से सम्बन्धित थी, फिर भी वे तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक क्रिया-कलापों के विभिन्न पहलुओं पर भी काफी प्रकाश डालती है।

चित्र 9.5: शांग-वंश की एक ऑरेकल हड्डी
साभार: हेर क्लूगबेज़र, 2004
स्रोत: https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/c/c9/Orakelknochen.JPG

दैवीयकरण के अतिरिक्त, अपने पूर्वजों और ईश्वरों को प्रसन्न करने के लिए एक प्रमुख आनुष्ठानिक क्रिया बलिदान थी। चूंकि ऐसा माना जाता था कि इन आत्माओं के प्रसन्न होने से संसार में रहने वाले लोगों के कल्याण पर इसका प्रत्यक्ष असर पड़ता था, इसलिए ऐसा विश्वास था कि उन्हें खुश करने के लिए विस्तृत अनुष्ठान किया जाना ज़रूरी था। इसमें मानव और जानवर दोनों का बलिदान किया जा सकता था। इस इकाई में पहले वर्णित शवाधान स्थल शांग लोगों के कर्तव्य और बलिदान संबंधी धार्मिक विश्वासों के महत्व के विषय में पर्याप्त साक्ष्य प्रदान करते हैं।

9.4.7 लेखन

ऑरेकल हड्डियों की यह महत्वपूर्ण विशेषता है कि पूर्व में चीनी लेखन के जो प्राचीनतम साक्ष्य हमारे पास हैं, इसी पर पाये गये हैं। इस काल में लेखन की खोज के साथ, शांग काल को चीन का वह काल माना जा सकता है जिसमें सभ्यता के सभी लक्षण मौजूद थे।

ऑरेकल हड्डियां और कांस्य की वस्तुओं पर पाये गये लिखित प्रतीक बाद में आगे चलकर चीनी लिपि के अग्रदूत बन गए। चीनी लिखावट प्रतीकात्मक है। एक अकेला प्रतीक, एक विचार या चित्र का प्रतिनिधित्व करता है और स्वयं इसी में निहित इसका अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, चीनी शब्दों में बच्चा (child) एक पृथक (single) वर्ण (character) है जैसे 子 और आदमी को चीनी भाषा में 人 इस प्रकार लिखते हैं। यह लिपि ध्वनि विज्ञान पर आधारित लिपियों जैसे अंग्रेजी या हिन्दी से काफी भिन्न है, जहां लिखित प्रतीक ध्वनि को दर्शाते हैं और स्वयं में कोई अर्थ नहीं प्रकट करते। प्राप्त शांग लेखन पूरी तरह से प्रतीकात्मक था। यद्यपि वह आधुनिक चीनी लिपि से थोड़ा अलग है, लेकिन चीनी विद्वानों द्वारा इसे पढ़ा और लिखा जा सकता है।

चित्र 9.6 : राजा वू डिंग के शासन काल की ऑक्स स्केपुला ऑरेकल हड्डी पर उत्कीर्ण लिपि, उत्तर शांग वंश

साभारः बेबलस्टोन, 2011

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/8/8b/Shang_dynasty_inscribed_scapula.jpg

बोध प्रश्न-2

1) आपको अपने अध्ययन काल के दौरान चीन के राजा की स्थिति में क्या कुछ विशिष्ट लगा?

.....

.....

.....

.....

.....

2) 'मल्टीट्यूड्स' (बहुसंख्यक) कौन थे?

.....

.....

.....

.....

.....

3) शांग चीन में बलिदान को क्यों आवश्यक समझा जाता था?

.....

.....

.....

.....

.....

4) चीनी भाषा को लिखने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली लिपि की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइये?

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 शांग कौन थे?

चीन की कांस्य युगीन सभ्यता की प्रकृति के संबंध में हमारी अवधारणा पूर्ण रूप से बाद के कालों में प्राप्त लिखित रिकॉर्ड्स पर आधारित थी। परन्तु नवीन आधुनिक पुरातात्विक प्रमाणों ने इस बुनियादी काल के संबंध में हमारी समझ को बढ़ाने में विशिष्ट योगदान दिया।

9.5.1 पुरातात्विक साक्ष्य और लिखित रिकार्ड्स

चीन में शांग राजवंश के अस्तित्व के सर्वाधिक प्रारम्भिक सन्दर्भ पहली सहस्त्राब्दी बी सी ई के अन्त में लिखित ग्रन्थों में मिलते हैं जो कि शांग शासन के कई सौ से हज़ार वर्ष बाद लिखे गये थे। इसमें शांग के विषय में जो जानकारी थी वह काफी संक्षिप्त थी। इसके अतिरिक्त और कोई भौतिक साक्ष्य इनके अस्तित्व के बारे में जानकारी नहीं देते थे। एक सौ वर्ष पहले ऑरेकल हड्डियों पर लिखित अभिलेखों की खोज के साथ और बाद में कई स्थानों पर और विशेष रूप से अन्यांग क्षेत्रों की विशेष खुदाई के साथ यह सब परिवर्तित होना शुरू हुआ।

जिन राजाओं के नाम ऑरेकल हड्डियों पर मिले वह ऐतिहासिक दस्तावेजों में भी मिलते थे। लेडी हाओ की कब्र पहली ऐसी कब्र थी जो ऐतिहासिक गाथाओं में शामिल व्यक्तियों से संबंधित थी। चीन की सभ्यता का मिथक जो काफी हद तक धुंधला था अब स्पष्ट होने लगा था। अब जबकि चीन में पुरातात्विक खोजों और खुदाई काफी रफ्तार से चल रही है तब हम यह आशा कर सकते हैं कि यह तस्वीर भविष्य में और स्पष्ट हो जाएगी।

निश्चय ही लिखित ऐतिहासिक विवरणों और पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त साक्ष्यों के मध्य सम्बन्ध ने शांग सभ्यता के बारे में हमारी जानकारी को और अधिक विश्वसनीय बना दिया है। साथ ही, कुछ विद्वान यह मानते हैं कि कैसे ऐतिहासिक कथाएँ शांग सभ्यता की अवधारणा को सीमित कर सकती हैं। प्रायः इतिहासकार और पुरातत्वेत्ता अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए पुरातात्विक साक्ष्यों को लिखित विवरणों से मिलान करके तोड़-मरोड़ देते हैं या कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को अनदेखा कर देते हैं। इससे शांग सभ्यता और उनके पूर्ववर्त्ती के संबंध में जो छवि उभर रही है उसके प्रमुख आयाम नज़रअंदाज़ हो सकते हैं, छूट सकते हैं।

9.5.2 ज़िया (Xia) का रहस्य

ऐतिहासिक कथाओं में प्रतिनिधित्व और पुरातात्विक साक्ष्यों के मध्य विरोधाभास को ज़िया राजवंश संबंधित बहस में उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है। चीन की ऐतिहासिक परम्परा के अनुसार चीन का पहला राजवंश ज़िया का था न कि शांग का। परम्परागत् कथाओं के अनुसार ज़िया का अन्तिम शासक, शांग के पहले शासक द्वारा हराया गया था। इसके परिणामस्वरूप चीन के कई पुरातत्वविद् ज़िया को एर्लितोउ संस्कृति के रूप में देखते हैं जिसका अध्ययन हम इस इकाई के प्रारंभ में कर चुके हैं। यद्यपि इतिहासकार राबर्ट थॉर्प संकेत करते हैं कि 'परम्परागत इतिहास की अपेक्षाओं और एर्लितोउ संस्कृति के समय-स्थान के मध्य मिलान से केवल सुखद अनुभव ही मिलता है परन्तु इस बात को परिपुष्ट करने के साक्ष्यों की कमी रह गयी कि क्या ज़िया राज्य, या लोग, या संस्कृति का कभी कोई अस्तित्व था भी या नहीं' (थॉर्प, 2005: 61)। यह आगे आने वाला समय ही बताएगा कि आगे होने वाली पुरातात्विक खुदाई चीन की कांस्य युगीन सभ्यता में ज़िया को प्राचीनतम सभ्यता के रूप में स्थान देती है या नहीं।

9.6 चीन की कांस्य युगीन दुनियाः अनेक केन्द्र और विनिमय का जाल

पहले चीन की सभ्यता का मूल केन्द्र उत्तरी चीन के वेई (Wei) नदी घाटी क्षेत्र में समझा जाता था और यह माना जाता था वहां से यह एक ही स्रोत पीली नदी का अनुकरण करते हुए पहले पूरब की ओर और बाद में धीरे-धीरे दक्षिण दिशा की ओर बढ़ने लगा।

पिछले दशक की पुरातात्विक खोजों ने इस अवधारणा को उलट दिया है। 1970 के दशक से कार्बन डेटिंग के प्रयोग से यह ज्ञात हुआ कि चीन के विभिन्न छोटे-छोटे भागों में, मुख्यतः चीन के उत्तरी और उत्तर और मध्य-पश्चिमी क्षेत्रों में, उत्तर नवपाषाण और कांस्य युगीन सभ्यतायें एक साथ विकसित हो रही थीं। उदाहरण के लिए, यांगज़ी नदी क्षेत्र में दक्षिण मध्य चीन में हनान प्रान्त में पाए जाने वाले स्थल, विशेष रूप से समारोहों में प्रयोग होने वाली कांस्य की घंटियों, *नाओ* (*nao;* अनुष्ठानिक घंटियाँ) के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें कुछ संस्कृतियाँ एक ही पुरातन काल की हैं, तथा उनकी श्रेष्ठता का स्तर भी उत्तर चीन में केन्द्रित बेहतर ज्ञात संस्कृतियों से तुलनीय है। चीन के अलग-अलग हिस्सों में फैली विभिन्न कांस्य युगीन संस्कृतियों का सह-अस्तित्व आधुनिक चीनी पुरातत्व विज्ञान की सबसे रोमांचक खोज है, जो शायद चीनी सभ्यता के बहु-केन्द्रित स्रोतों की तरफ संकेत करती है।

साथ ही अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों में परस्पर आपसी संबंध और विनिमय के स्पष्ट सबूत मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर, कांसे की वस्तुओं की ढलाई के लिए आवश्यक तांबे के अयस्क को मध्य चीन की खानों से निकाला जाता था। यह वहां से कई सौ किलोमीटर से भी अधिक दूरी तय करके दक्षिण में स्थित अन्यांग और अन्य क्षेत्रों के विशाल कारखानों और कार्यशालाओं में निर्यात किया जाता था। एक और विशेष बात यह है कि यह पाया गया कि विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की आकृतियों की वस्तुओं को एक ही तकनीक से कांस्य को ढालकर बनाया गया था। इसका कारण सिर्फ तकनीक ही नहीं था बल्कि लोगों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों और साथ ही साथ कारीगरों में समानता थी, जो विभिन्न क्षेत्रों में आवागमन करते थे। यही कारण है कि लोग इस मत पर विश्वास करते हैं कि कांस्य युगीन सभ्यता में घोड़े और घोड़ेगाड़ी का प्रयोग 1200 बी सी ई के अंत में चीन में बाहर से, उत्तर-पश्चिम की ओर से आया। हाथियों और व्हेल मछलियों के कंकाल साथ ही साथ कौड़ी शेल भी मिले हैं जिसमें से कुछ भी उस क्षेत्र में नहीं मिलता, लेकिन ये सब अन्यांग के शवाधान स्थलों से मिले हैं। यह विनिमय के व्यापक जालतंत्र के होने का भी सबूत देता है, जो उस समय आवश्यक रूप से पहले ही से अस्तित्व में रहा होगा।

नई पुरातात्विक खोजों के आधार पर, प्राचीन चीन के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता के.सी. चांग ने 'आदान प्रदान के क्षेत्र' (interaction sphere) का विचार प्रस्तुत किया जिसमें यह बताया कि वर्तमान चीन में जो विभिन्न प्रकार की संस्कृतियां पनप रही थीं वे परस्पर एक दूसरे से आपस में मिलती-जुलती और प्रभावित हो रही थीं। दूसरे विद्वानों ने सुझाव दिया कि कुछ क्षेत्रों, जैसा कि दक्षिणी-पश्चिम चीन के सैन्ज़िन्गडुई (Sanxingdui) में संस्कृति ने विकास के इतने अलग मार्ग का अनुकरण किया कि इस संस्कृति को उस सभ्यता में शामिल करना कठिन है जिसे आमतौर पर 'चीनी संस्कृति' माना जाता है। यद्यपि ये चर्चा अभी तक इतिहासकारों की बहस का विषय है, फिर भी पिछले कुछ समय में यह स्पष्ट हो गया है कि चीन की कांस्य युगीन सभ्यता कहीं अधिक व्यापक और विस्तृत थी जितना कि सोचा भी नहीं गया था।

9.7 शांग सभ्यता की विरासत

ऊपर चर्चित कांस्य युगीन सभ्यता के अनेक तत्व काफी समय बाद तक जारी रहे और इन्होंने एक उस मूलभूत संस्कृति का निर्माण किया जिसे प्रायः 'चीनी सभ्यता' के नाम से जाना जाता है। इनमें निम्न तथ्य सम्मिलित हैं:

- *प्रतीकात्मक लिपि:* वर्तमान में दुनिया की लेखन पद्धतियों में चीन की लिपि अद्वितीय है। अक्षरों का अभाव, चिह्नों द्वारा विचारों और चित्रों का प्रतिनिधित्व, ऐसी विशिष्टताएं हैं कि चीनी लिखित भाषा को अलग से ही पहचाना जा सकता है। ये स्पष्ट रूप से शांग सभ्यता के साथ ही अस्तित्व में आई।

- *वंश का महत्व:* चीनी समाज में बहुत लंबे काल से एक विशिष्ट वंशीय आम समूह की एकजुटता पर विशेष ज़ोर दिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष पहचान के साथ अपने वंश से जुड़ा होता था और परम्परागत रूप से वंश इन व्यक्तियों पर अपना प्रभुत्व और उन पर नियंत्रण रखता था।

- *पितृ:* चीनी परिवार आज भी अपने मृतक पूर्वजों को याद करने और सम्मान देने पर विशेष महत्व देते हैं। यहां तक कि बहुत से चीनी समाज प्रतिदिन अपने पूर्वजों की कब्रों को साफ करना, खाना देना, पैसे और अन्य आवश्यक वस्तुएँ उनकी कब्र पर रखना जरूरी मानते हैं।

- *बड़े स्तर पर श्रमिकों की गतिशीलता:* चीन की प्रसिद्ध दीवार, पीली नदी पर बने बांध और नहरें, ऐतिहासिक महल, शहरों की दीवारें आदि स्थलों पर चीनी कुशल श्रमिकों का

प्रयोग करके विशालकाय परियोजनाओं के निर्माण के लिए चीन को इतिहास में जाना जाता है। कांस्य युगीन सभ्यता की संरचनाएं, शहर की दीवारें, शाही कब्रें, विशालकाय कांसे की कार्यशालाएं, मन्दिर-महल परिसरों के अवशेष इस बात का प्रमाण प्रकट करते हैं कि ये सब उस समय मौजूद था।

- *मानव और स्वर्ग के बीच मध्यस्थ के रूप में शासक की धारणा:* यह भी एक अवधारणा थी जिसके आधार पर बाद में चीनी राजाओं ने 'स्वर्ग से अधिदेश प्राप्त सत्ता' के अधिकार का दावा किया। इसका विकास शांग राजवंश में हुआ, क्योंकि शांग राजा ही एक ऐसे शासक थे जो सीधे आत्माओं और ईश्वर से बात करने का दावा करते थे।

उपर्युक्त तथा अन्य पहलू चीनी सभ्यता की विरासत के निर्माण काल के रूप में शांग काल की हमारी समझ को न्यायसंगत ठहराते हैं।

बोध प्रश्न-3

1) क्या चीन की नवीन पुरातात्विक खोजें इस काल के लिखित अभिलेखों की पुष्टि करती हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) चीन में अलग-अलग कांस्य युगीन क्षेत्रों के मध्य विनिमय-तंत्र पर पचास शब्द लिखिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) शांग संस्कृति की चार प्रमुख विरासतों की सूची बनाइये।

.....

.....

.....

.....

.....

9.8 सारांश

चीन की हाल में की गई पुरातात्विक खोजें एर्लितोउ और एर्लिगांग संस्कृति से लेकर अन्यांग के शांग सभ्यता केन्द्रों तक हमारे सामने कांस्य युगीन सभ्यता के विकास का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती हैं। इन्होंने चीन के विशाल क्षेत्र में फैले अन्य समकालीन कांस्य युगीन

सभ्यताओं के अस्तित्व को भी सामने लाया है। इनके स्पष्टतः परस्पर आपस में तथा बाहरी संसार के क्षेत्रों से एक दूसरे के साथ संपर्क और आदान-प्रदान के संबंध थे। चीन की कांस्य युगीन सभ्यता अपनी उच्च स्तरीय परिष्कृत कांसे की ढलाई और कांसे की सुन्दर वस्तुओं के निर्माण से पहचानी जाती है। उस समय के लोग बड़े पैमाने पर सार्वजनिक परियोजनाओं के निर्माण में सक्षम थे। वे अपने पूर्वजों की वंशीय परम्परा और उनके प्रति कर्तव्यों पर विशेष महत्व देते थे। दूसरी सहस्त्राब्दि बी सी ई के अन्त तक शांग बस्तियां एक शक्तिशाली राज्य के अस्तित्व को प्रकट करती हैं। यह राज्य ऐसे शासक द्वारा चलाया जाता था जो धार्मिक एवं राजनीतिक प्रमुख होता था। उन्होंने एक परिष्कृत लिखावट का विकास किया था और उनके द्वारा छोड़े गये कुछ लिखित दस्तावेजों से हमें उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या और आस्था के प्रति समझ की जानकारी मिलती है। इस स्थिति में यह कहा जा सकता है कि वास्तव में चीन का इतिहास शांग से प्रारम्भ हुआ।

9.9 शब्दावली

डी (Di) : उच्च या मुख्य देवता के लिए प्रयुक्त परम्परागत चीनी शब्द।

लोगोग्राफ (Logograph) : एक लिखित चिह्न जो किसी शब्द या वाक्यांश को प्रदर्शित करता है।

प्रतीकात्मक लिपि (Logographic script) : लिखने का एक तरीका जो प्रतीकों पर आधारित होता है।

ऑरेकल हड्डियां (Oracle bones) : उत्कीर्ण की गईं जानवरों की हड्डियों और कुछए के कवच का समूह जो चीन में अभिलेख लिखने के लिये प्रयुक्त होते थे और मुख्य रूप से जिनका प्रयोग प्राचीन चीन के शांग राजवंश में दैवीय भविष्यवाणी के लिए किया जाता था।

शाफ्ट शवाधान गड्ढे (Shaft Burial Pits) : ऊर्ध्वाधर पक्षों के साथ एक गहरी आयताकार कब्र जिसमें मृतकों को अन्य भौतिक सामानों के साथ दफनाया जाता था।

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) एर्लितोउ, एर्लिगांग, अन्यांग के विस्तृत अध्ययन के लिए भाग 9.3 देखें

2) कांस्य ढलाई। विस्तार के लिए उप-भाग 9.4.1 देखें

3) शाफ्ट शवाधान गड्ढे, भौतिक वस्तुएं, मृत्यु के बाद जीवन, सामाजिक विभाजन। विस्तृत वर्णन के लिए उप-भाग 9.4.3 देखें।

बोध प्रश्न-2

1) पितृसत्तात्मक शासन, वंशानुगत उत्तराधिकार, लगातार गतिशीलता, धर्मतन्त्र आधारित राज्य। विस्तृत वर्णन के लिए उप-भाग 9.4.5 देखें

2) उप-भाग 9.4.4 देखें

3) ईश्वर और पूर्वजों की आत्माओं को प्रसन्न करना, जनता की सुख-सुविधा आदि। विस्तृत वर्णन के लिए उप-भाग 9.4.6 देखें

4) प्रतीकात्मक, ध्वनि आधारित लिपि। विस्तृत वर्णन के लिए उप-भाग 9.4.7 देखें

बोध प्रश्न-3

1) हाँ, लेकिन लिखित दस्तावेजों के सभी दावों को पुरातात्विक खोजों द्वारा सत्यापित नहीं किया जा सका है। ऑरेकल हड्डियों और ज़िया (Xia) के रहस्य के विवरण देकर अपने उत्तर को स्पष्ट करिए। विस्तृत वर्णन के लिए उप-भाग 9.5.1 और 9.5.2 देखें

2) कार्बन डेटिंग का महत्व, ताँबे के अयस्क का विनिमय, घोड़े के साक्ष्य, जानवरों की खोपड़ियों और कंकालों के विस्तृत वर्णन। विस्तार के लिए भाग 9.6 देखें

3) विस्तृत वर्णन के लिए भाग 9.7 देखें

9.11 सन्दर्भ ग्रंथ

बाग्ले, रॉबर्ट. 1999. 'शांग आर्कीयोलॉजी'. माइकल लोवी और एडवर्ड एल. शॉघनेसी (संपादन). *कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ एशियन्ट चाइनाः फ्रॉम ओरीजिन्स ऑफ सिविलाइज़ेशन टू 221 बी सी.* कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

चांग, क्वांग-चिह. 1980. *शांग सिविलाइज़ेशन.* न्यू हवेनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

चांग, क्वांग-चिह. 1986. *द आर्कियोलॉजी ऑफ अनशिएन्ट चाइना.* 4th संस्करण. न्यू हवेनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

केटली, डेविड. 1990. 'अर्ली सिविलाइजेशन इन चाइनाः रिफ्लैक्शन्स ऑन हाउ इट बिक्मे चाइनीज' पॉल रॉप (संपादन). *हेरिट्ेज ऑफ चाइनाः* कंटेम्परेरी पर्सपेक्टिक्स *ऑन चाइनीज सिविलाइज़ेशन.* बर्कलेः कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी प्रेस.

केटली, डेविड. 1999. 'शांगः चाइनाज़ फर्स्ट हिस्टॉरिकल डाइनेस्टी' माइकल लोवी एंड एडवर्ड एल. शॉघनेसी (सं.) *कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ एन्सिएन्ट चाइना.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

थॉर्प, राबर्ट एल. 2005. *चाइना इन द अर्ली ब्रांज़ ऐंजः शांग सिविलाइज़ेशन.* फिलाडेल्फियाः पेंसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी प्रेस.

पी डी एफः

http://www.iub.edu/~g380/3.1-Shang-2010.pdf

http://www.iub.edu/~g380/3.3-Bones-2010.pdf

http://www.iub.edu/~g380/3.4-Shang_Religion-2010.pdf

http://www.iub.edu/~g380/3.5-Kings-2010.pdf

http://www.iub.edu/~g380/3.6-Bronze-2010.pdf

http://www.iub.edu/~g380/3.8-Society-2010.pdff

9.12 शैक्षणिक वीडियो

हाउ एन्सिएन्ट चाइनीज़ ब्रॉंज़ेज़ वर क्रिऐटेड

https://www.youtube.com/watch?v=ayuev.vglm

ऑरेकल बोन, शांग डाइनेस्टी

https://www.youtube.com/watch?v=s9gflq0o

194 blank